FAIZANE HAZRATE SABIRE PAK (HINDI)

फ़ैज़ाने ह़ज़रते साबिरे पाक (رَحْمَةُ الله تَعَالٰی عَلَیْه)

मज़ार शरीफ़ ह़ज़रते सय्यिदुना अलाउद्दीन अली अह़मद साबिर चिश्ती (कलयर शरीफ़)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

किताब पढ़ने की दुआ़

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेगें याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।

(مستطرف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

(अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये)

ता़लिबे ग़मे मदीना बक़ीअ़ व मग़फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صلّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी इस इल्म पर अ़मल न किया) (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ़ फ़रमाइये ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

मजलिसे तराजिम हिन्द (दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عزوجل दा'वते इस्लामी की मजलिस "अल मदीनतुल इल्मिय्या" ने येह रिसाला उर्दू ज़बान में पेश किया है और मजलिसे तराजिम ने इस रिसाले का हिन्दी रस्मुल ख़त करने की सआ़दत ह़ासिल की है [भाषांतर (Translation) नहीं बल्कि सिर्फ़ लीपियांतर (Transliteration) या 'नी बोली तो उर्दू ही है जब कि लीपि हिन्दी की गई है] और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस रिसाले में अगर किसी जगह ग़लती पाएं तो मजलिसे तराजिम को ब ज़रीअ़ए Sms, E-mail, Whats App या Telegram ब शुमूल सफ़ह़ा व सत्र नम्बर मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाबे आख़िरत कमाइये।

मदनी इल्तिजा : इस्लामी बहनें डायरेक्ट राबिता न फ़रमाएं!!!

...राबिता :-

मदनी मर्कज़, क़ासिम ह़ाला मस्जिद, नागर वाड़ा, बरोडा, गुजरात (अल हिन्द) ☎ 9327776311

E-mail : tarajim.hind@dawateislami.net

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त (लीपियांतर) ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ी = ی	ु = و	आ = آ	य = ی	ह = ھ	व = و	न = ن

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

फ़ैज़ाने ह़ज़रते साबिरे पाक

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : जिस ने मुझ पर सो मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की दोनों आंखों के दरमियान लिख देता है कि येह निफ़ाक़ और जहन्नम की आग से आज़ाद है और उसे बरोज़े क़ियामत शुहदा के साथ रखेगा।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

कमाले सब्र ने साबिर बना दिया

सिलसिलए आ़लिया चिश्तिया के अ़ज़ीम बुज़ुर्ग ह़ज़रते बाबा फ़रीदुद्दीन मसऊ़द गंजे शकर رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की बारगाह में आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के सआ़दत मन्द भांजे और मुरीद तरबियत ह़ासिल करने के लिये ह़ाज़िर हुवे तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने सब से पहले फ़र्ज़ और नफ़्ल नमाज़ों पर इस्तिक़ामत इख़्तियार करने की नसीह़त फ़रमाई और इन्हें लंगर ख़ाने की ज़िम्मेदारी सोंप दी। चूंकि मुर्शिद ने लंगर की तक़्सीम का हुक्म फ़रमाया था उस में से खाने की सराह़त नहीं की थी लिहाज़ा येह

1 ... مَجْمَعُ الزَّوَائِد، کتاب الادعیة، باب فی الصلاة علی النبی الخ، ۱۰/۲۵۳، حدیث: ۱۷۲۹۸ ملتقطاً

www.dawateislami.net

सआ़दत मन्द मुरीद हुक्मे मुर्शिद की बजा आवरी करते हुवे लंगर ख़ाने से खाना तक़्सीम फ़रमाता लेकिन ख़ुद एक लुक़्मा भी न खाता । पूरा दिन रोज़े से रहता और जंगली दरख़्त के पत्तों, कूंपलों, फलों और फूलों से इफ़्तार कर लिया करता । एक अ़र्से तक येह सिलसिला जारी रहा लेकिन इस मुजाहदे की वज्ह से जिस्म निहायत कमज़ोर और लाग़र हो गया । जब ह़ज़रते बाबा फ़रीदुद्दीन मसऊ़द गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपने सआ़दत मन्द भांजे और कामिल मुरीद की येह कैफ़िय्यत मुलाह़ज़ा फ़रमाई तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने पूछा : आप खाना तक़्सीम कर के ख़ुद भी कुछ खाते हैं या नहीं ? सआ़दत मन्द मुरीद ने नज़रें झुका लीं और येह ख़ूब सूरत जवाब बारगाहे मुर्शिद में अ़र्ज़ किया : आ़लीजाह ! आप ने खिलाने का हुक्म इरशाद फ़रमाया था, मुझ में इतनी जुरअत कहां कि मुर्शिद की इजाज़त के बिग़ैर एक दाना भी खा सकूं ? येह जवाब सुन कर ह़ज़रते बाबा फ़रीद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه सआ़दत मन्द भांजे और कामिल मुरीद के कमाले सब्र से बहुत ख़ुश हुवे और सीने से लगा कर **साबिर** का लक़ब अ़ता फ़रमाया ।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना फ़रीदुद्दीन मसऊ़द गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की बारगाह से **साबिर** का लक़ब पाने वाले कामिल मुरीद "सुल्त़ानुल औलिया, कुत़्बे आ़लम, बानिये सिलसिलए चिश्तिया साबिरिया **ह़ज़रते सय्यिद अ़लाउद्दीन अ़ली अ़ह़मद साबिर कलयरी** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه हैं ।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के यूं तो

1 .....**अल्लाह** के ख़ास बन्दे, स. 578 मुलख़्ख़सन, सियरुल अक़्ताब, स. 200 मुलख़्ख़सन, ख़ज़ीनतुल अस्फ़िया, 2 / स. 153 मुलख़्ख़सन, इक़्तिबासुल अन्वार, स. 498 मुलख़्ख़सन, बहाउद्दीन ज़करिया मुल्तानी, स. 86

www.dawateislami.net

बेशुमार औसाफ़ हैं लेकिन मुर्शिदे करीम की मुबारक ज़बान से मिलने वाला लक़ब आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की शोहरत का सबब बना और आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को ह़ज़रते **साबिरे पाक** के नाम से याद किया जाने लगा।

विलादते बा सआ़दत

आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की विलादत 19 रबीउ़ल अव्वल सिने 592 हिजरी मुत़ाबिक़ 19 फ़रवरी सिने 1196 ईसवी को ब वक़्ते तहज्जुद बरोज़ जुमा'रात हरात (अफ़ग़ानिस्तान) में हुई। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का वुजूदे मसऊ़द नौमौलूद होने के बा वुजूद ऐसा था कि दाया को बे वुज़ू गुस्ल कराने की हिम्मत न हुई।[1]

शजरए नसब

आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का शजरए नसब येह है : सय्यिद अ़लाउद्दीन अ़ली अह़मद **साबिर** बिन सय्यिद अ़ब्दुर्रह़ीम बिन सय्यिद अ़ब्दुस्सलाम बिन सय्यिद सैफ़ुद्दीन बिन सय्यिद अ़ब्दुल वह्हाब बिन ग़ौसुल आ'ज़म सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن)[2] बा'ज़ ने आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का शजरए नसब येह तह़रीर फ़रमाया है : अ़ली अह़मद बिन सय्यिद अ़ब्दुल्लाह बिन सय्यिद फ़त्ह़ुल्लाह बिन सय्यिद नूर मुह़म्मद बिन सय्यिद अह़मद बिन सय्यिद ग़यासुद्दीन बिन सय्यिद बहाउद्दीन बिन सय्यिद दावूद बिन सय्यिद ताजुद्दीन बिन सय्यिद मुह़म्मद इस्माईल बिन सय्यिद इमाम मूसा काज़िम बिन सय्यिद इमाम जा'फ़र

1.....अल्लाह के ख़ास बन्दे, स. 574, मह़फ़िले औलिया, स. 382 मुलख़्ख़सन
2.....तज़किरए औलियाए बर्रे सग़ीर, 2 / 1

www.dawateislami.net

सादिक़ बिन सय्यिदुश्शुहदा हज़रते इमामे हुसैन बिन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा[1] । लेकिन इस बात को सह़ीह़ क़रार दिया गया है कि आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ह़सनी सय्यिद हैं और ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की औलाद से हैं ।[2] आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के वालिद का नाम अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुर्रह़ीम भी ज़िक्र किया गया है ।[3]

कान में अज़ान

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बच्चा पैदा हो तो मुस्तह़ब है कि उस के कान में अज़ान व इक़ामत कही जाए कि इस त़रह़ इब्तिदा ही से बच्चे के कान में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नाम पहुंच जाएगा । इस त़रह़ एक मुसलमान बच्चे के लिये इस्लाम के बुन्यादी अ़क़ाइद सिखाने का भी आग़ाज़ हो जाता है, बच्चे की रूह़ नूरे तौह़ीद से मुनव्वर हो जाती है और उस के दिल में इश्क़े रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शम्अ़ फ़रोज़ां होती है । हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने नवासे हज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन अ़ली رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के कान में ख़ुद अज़ान दी जैसा कि हज़रते सय्यिदुना अबू राफ़ेअ़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : जब हज़रते सय्यिदतुना फ़ाति़मा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا के हां हज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन अ़ली رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की विलादत हुई तो मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब,

1.....फ़ख़रुल तवारीख़, स. 276 ग़ैर मत़बूआ़
2.....हज़रते मख़्दूम अ़लाउद्दीन अ़ली अह़मद **साबिर** कलयरी, स. 44
3.....हज़रते मख़्दूम अ़लाउद्दीन अ़ली अह़मद **साबिर** कलयरी, स. 56

www.dawateislami.net

दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को उन के कान में नमाज़ वाली अज़ान देते देखा।[1] ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लाउद्दीन अ़ली अह़मद **साबिर** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के कान में ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल क़ासिम गिरगानी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अज़ान दी और फ़रमाया : येह बच्चा **क़ुत़बे आ़लम** होगा।[2]

नाम व लक़ब में भी इम्तियाज़ी शान

मन्क़ूल है कि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की विलादत से क़ब्ल ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने ख़्वाब में "अ़ली" नाम रखने का हुक्म फ़रमाया फिर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़्वाब में तशरीफ़ ला कर "अह़मद" नाम रखने का हुक्म फ़रमाया। यूं आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का नाम अ़ली अह़मद रखा गया। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की विलादत के बा'द एक बुज़ुर्ग आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के वालिदे गिरामी से मुलाक़ात के लिये तशरीफ़ लाए और आप को देख कर फ़रमाया : "येह बच्चा अ़लाउद्दीन कहलाएगा।"[3]

आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के मामूं ह़ज़रते सय्यिदुना बाबा फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को **साबिर** का लक़ब अ़त़ा फ़रमाया[4] येही वज्ह है कि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को "**अ़लाउद्दीन अ़ली अह़मद साबिर**" के नाम से शोहरत ह़ासिल है।

---

1 ... ترمذی، کتاب الاضاحی، باب الاذان فی اذن المولود، ۳/۱۷۳، حدیث: ۱۵۱۹

2 .....**अल्लाह** के ख़ास बन्दे, स. 575 मुलख़्ख़सन

3 .....ह़ज़रते मख़्दूम अ़लाउद्दीन अ़ली अह़मद **साबिर** कलयरी, स. 42 मुलख़्ख़सन

4 .....**अल्लाह** के ख़ास बन्दे, स. 575 मुलख़्ख़सन, ह़ज़रते मख़्दूम अ़लाउद्दीन अ़ली अह़मद **साबिर** कलयरी, स. 42 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

वालिदैन

आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने जिस घराने में आंख खोली वोह हज़रते सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से नसबी तअ़ल्लुक़ होने के साथ साथ इल्मो अ़मल, ज़ोहदो तक़्वा और सब्रो क़नाअ़त का मर्कज़ था। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के वालिद, नबीरए ग़ौसे आ'ज़म हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ता'लीमो तरबियत बग़दाद के इल्मी माहोल में हुई थी जिस की बिना पर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इल्मो अ़मल में बे मिसाल थे। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की वालिदा हज़रते सय्यिदतुना हाजिरा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا नसबन फ़ारूक़ी थीं इसी लिये हज़रते सय्यिदुना अ़ली अह़मद **साबिर** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की तबीअ़त में फ़ारूक़ी जलाल भी नुमायां था। जब आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की उ़म्र पांच साल हुई तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के वालिदे माजिद का इन्तिक़ाल हो गया। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की वालिदा ने आप की तरबियत फ़रमाई।(1)

ज़बान से अदा होने वाला पहला जुम्ला

हज़रते सय्यिदुना अ़लाउद्दीन अ़ली अह़मद **साबिर** कलयरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने जिस घर में आंख खोली वोह तिलावते क़ुरआन और ज़िक्रे इलाही से मुअ़त्तर रहता था येही वज्ह है कि आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ज़बान से जो पहला लफ़्ज़ निकला वोह لَا مَوْجُوْدَ اِلَّا اللّٰہ था।(2)

1.....**अल्लाह** के ख़ास बन्दे, स. 574 मुलख़्ख़सन, हज़रते मख़्दूम अ़लाउद्दीन अ़ली अह़मद **साबिर** कलयरी, स. 48 मुलतक़तन

2.....तज़्किरए औलियाए पाको हिन्द, स. 63

www.dawateislami.net

ज़बान खुलने के बा'द अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का नाम सिखाइये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने औलाद की ने'मत से नवाज़ा है उन्हें चाहिये जब बच्चा ज़रा होशियार हो जाए और ज़बान खोलने लगे तो सब से पहले उस के ख़ालिक़ो मालिक और राज़िक़ का इस्मे ज़ात "**अल्लाह**" सिखाएं और इस बात का भी इल्तिज़ाम करें कि इस की पाको साफ़ ज़बान से सब से पहले कलिमए त़य्यिबा ही जारी हो। हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि हुज़ूरे पाक साहिबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अपने बच्चों की ज़बान से सब से पहले لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ कहलवाओ।"(1)

बच्चे को ज़िक्रुल्लाह ऐसे सिखाइये

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने अपनी नवासी के लिये सब घरवालों को कह रखा था कि इस के सामने "**अल्लाह अल्लाह** का ज़िक्र करते रहें ताकि इस की ज़बान से पहला लफ़्ज़ "**अल्लाह**" निकले और जब वोह नवासी आप دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की बारगाह में लाई जाती तो आप ख़ुद

1 . . . شعب الایمان، باب فی حقوق الاولاد، ۶/۳۹۷، حدیث: ۸۶۴۹

www.dawateislami.net

भी उस के सामने ज़िक्रुल्लाह करते। चुनान्चे, जब उस ने बोलना शुरूअ़ किया तो पहला लफ़्ज़ "**अल्लाह**" ही बोला।[1]

तहज्जुद की पाबन्दी फ़रमाते

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लाउद्दीन अ़ली अह़मद **साबिर** कलयरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने छे साल की उ़म्र से बा क़ाइ़दा ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ के साथ नमाज़ अदा करनी शुरूअ़ कर दी थी और कहा जाता है कि सातवां साल शुरूअ़ होने पर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने पाबन्दी के साथ तहज्जुद की नमाज़ पढ़नी शुरूअ़ कर दी। दिन में हर वक़्त इ़बादते इलाही में मश्ग़ूल रहते। बल्कि नमाज़े तहज्जुद के बा'द अक्सर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के हुजरे से ज़िक्रुल्लाह की आवाज़ें सुनाई देती थीं।[2]

बचपन की एक प्यारी आ़दत

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लाउद्दीन अ़ली अह़मद **साबिर** चिश्ती رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की उ़म्र जब एक साल हुई तो एक दिन दूध नोश फ़रमाते जब कि दूसरे दिन दूध न पीते, जब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه दो साल के हुवे तो एक दिन दूध पीने के बा'द दो दिन तक दूध नोश न फ़रमाते।[3]

---

1 .....तरबियते औलाद, स. 100

2 .....**अल्लाह** के ख़ास बन्दे, स. 576

3 .....**अल्लाह** के ख़ास बन्दे, स. 576 माख़ूज़न, तज़्किरए औलियाए पाको हिन्द, स. 63 माख़ूज़न

www.dawateislami.net

छोटी सी उ़म्र में ही रोज़ा रखने का मा'मूल

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का छोटी उ़म्र से ही रोज़ा रखने का मा'मूल था और मुसलसल रोज़ा रखने की येह आ़दत आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की आख़िरी उ़म्र तक जारी रही।[1]

रोज़े से सिह्ह़त मिलती है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रोज़े की बरकतों के भी क्या कहने ! रोज़ा रखने से सिह्ह़त मिलती है अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم से रिवायत है कि रसूले मक़्बूल, सय्यिदा आमिना के गुलशन के महकते फूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने सिह्ह़त निशान है : बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने बनी इसराईल के एक नबी عَلَيْهِ السَّلَام की त़रफ़ वह्ी फ़रमाई कि आप अपनी क़ौम को ख़बर दीजिये कि जो बन्दा भी मेरी रिज़ा के लिये एक दिन का रोज़ा रखता है तो मैं उस के जिस्म को सिह्ह़त भी अ़ता फ़रमाता हूं और उस को अ़ज़ीम अज्र भी दूंगा।''[2] इस ह़दीसे पाक से मुस्तफ़ाद (مُس+ت+فا) हुवा कि रोज़ा अज्रो सवाब के साथ साथ हुसूले सिह्ह़त का भी ज़रीआ़ है। अब तो साइन्सदान भी अपनी तह़क़ीक़ात में इस ह़क़ीक़त को तस्लीम करने लगे हैं। जैसा कि ऑक्सफ़ोर्ड यूनीवर्सिटी का प्रोफ़ेसर मूर पालिड (MOORE PALID) कहता है : ''मैं इस्लामी

---

1 .....**अल्लाह** के ख़ास बन्दे, स. 576 माख़ूज़न, तज़्किरए औलियाए पाको हिन्द, स. 63 माख़ूज़न

2 ... شعب الایمان، الباب الثالث والعشرون، فصل اخبار وحکایات فی الصیام، ۳/۴۱۱، حدیث: ۳۹۲۳

www.dawateislami.net

उ़लूम पढ़ रहा था जब रोज़ों के बारे में पढ़ा तो उछल पड़ा कि इस्लाम ने अपने मानने वालों को कैसा अ़ज़ीमुश्शान नुस्ख़ा दिया है ! मुझे भी शौक़ हुवा, लिहाज़ा मैं ने मुसलमानों की त़र्ज़ पर रोज़े रखने शुरूअ़ कर दिये। अ़र्सए दराज़ से मेरे मे'दे पर वरम था। कुछ ही दिनों के बा'द मुझे तक्लीफ़ में कमी महसूस हुई मैं रोज़े रखता रहा यहां तक कि एक महीने में मेरा मरज़ बिल्कुल ख़त्म हो गया।"[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बचपन ही में सजदों से महब्बत

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को बचपन ही से इबादतो रियाज़त का शौक़ था। ख़ास तौ़र पर बारगाहे इलाही में सजदा रेज़ होना आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को बहुत पसन्द था इसी लिये आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه दिन के मुख़्तलिफ़ औक़ात में छे मरतबा सजदा फ़रमाया करते और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की मुबारक ज़बान पर لَا مَوْجُوْدَ اِلَّا اللهُ का विर्द जारी रहा करता।[2]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बच्चा अपने बचपन में जो कुछ सीखता है वोह सारी ज़िन्दगी उस के ज़ेह्न में रासिख़ रहता है क्यूंकि बच्चे का दिमाग़ मिस्ले मोम होता है उसे जिस सांचे में ढालना चाहें ढाला जा सकता है येही वज्ह है कि बच्चों पर घर का माह़ोल बहुत ज़ियादा असर अन्दाज़ होता है। अगर घर में मदनी माह़ोल हो तो इस

1 .....फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब फ़ैज़ाने रमज़ान, स. 939
2 .....अल्लाह के ख़ास बन्दे, स. 575 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

की बरकत से छोटी उ़म्र ही से उस की ज़बान पर **अल्लाह अल्लाह**, नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मुबारक नाम और **मदीना मदीना** जारी हो जाता है, बचपन ही से सलाम करने में पहल करने की आ़दत डाली जाए तो वोह उ़म्र भर इस आ़दत को नहीं छोड़ता, अगर सच बोलने की आ़दत डाली जाए तो वोह सारी उ़म्र झूट से बेज़ार रहता है, अगर उसे सुन्नत के मुताबिक़ खाने पीने, बैठने, जूता पहनने, लिबास पहनने, सर पर इ़मामा बांधने और बालों में कंघी वग़ैरा करने का आ़दी बना दिया जाए तो वोह न सिर्फ़ ख़ुद इन पाकीज़ा आ़दात को अपनाए रखता है बल्कि उस के येह मदनी औसाफ़ उस की सोह़बत में रहने वाले दीगर बच्चों में भी मुन्तक़िल होना शुरूअ़ हो जाते हैं। अगर आप भी चाहते हैं कि आप की औलाद आंखों की ठन्डक और दिल का चैन बने तो अपने मदनी मुन्नों और मदनी मुन्नियों की इब्तिदा ही से तरबियत कीजिये और अपनी तरबियत के लिये सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त, मदनी मुज़ाकरों और मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र कीजिये ताकि आप का ज़ाहिरो बातिन नेकियों से मुज़य्यन हो और इस की बरकत से घर में सुन्नतों भरा मदनी माह़ोल बनाने में आसानी हो।

सांप के ज़ह्र से नजात की ख़ुश ख़बरी

एक रोज़ ह़ज़रते **साबिरे** पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के वालिदे माजिद आंखें बन्द किये मुराक़बे में मश्ग़ूल थे कि अचानक मरे हुवे सांप का एक टुकड़ा आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه पर और दूसरा टुकड़ा ज़मीन पर आ गिरा। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ह़ज़रते **साबिरे** पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की वालिदा को

www.dawateislami.net

उस मुर्दा सांप की जानिब मुतवज्जेह किया, वोह सांप के दो टुकड़े देख कर हैरत ज़दा हुईं और फ़रमाया : क्या मैं ख़्वाब देख रही हूं ? हज़रते सय्यिदुना अ़ली अह़मद **साबिर** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने वालिदा की तश्वीश दूर करते हुवे फ़रमाया : मैं ने सांपों के बादशाह को मार डाला है और सांपों से वा'दा लिया है कि वोह मेरे ख़ानदान के किसी फ़र्द को नहीं काटेंगे । लिहाज़ा आज से कोई सांप मेरे ख़ानदान के किसी फ़र्द को नहीं काटेगा ।[1]

तीन साल में उ़लूमे ज़ाहिरी की तक्मील

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने इब्तिदाई ता'लीम हरात (अफ़ग़ानिस्तान) में ही ह़ासिल की, फिर जब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के वालिद साहिब का इन्तिक़ाल हो गया तो आप की वालिदा ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه को अपने भाई ह़ज़रते बाबा फ़रीदुद्दीन मसऊ़द गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के सिपुर्द कर दिया । आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने अपनी हैरत अंगेज़ सलाह़िय्यत की बिना पर सिर्फ़ तीन साल के मुख़्तसर अ़र्से में कई उ़लूमे ज़ाहिरी ह़ासिल किये जैसा कि ह़ज़रते बाबा फ़रीद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه इरशाद फ़रमाते हैं : अ़लाउद्दीन अ़ली अह़मद **साबिर** (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه) ने तीन साल में अ़रबी व फ़ारसी की कुतुबे मुतदावला, फ़िक़्ह, ह़दीस, तफ़्सीर, मन्तिक़ व मआ़नी वग़ैरहा उ़लूम की तक्मील की । येह सब उ़लूम इतनी जल्दी ह़ासिल कर लिये कि कोई दूसरा बच्चा पन्दरह साल में भी ह़ासिल नहीं कर सकता था ।[2]

1.....अल्लाह के ख़ास बन्दे, स. 575 मुलख़्ख़सन
2.....ह़ज़रते मख़्दूम अ़लाउद्दीन अ़ली अह़मद **साबिर** कलयरी, स. 48

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हज़रते सय्यिदुना अ़लाउद्दीन अ़ली अह़मद **साबिर** कलयरी رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुसूसी रह़मत थी कि आप ने तीन साल के मुख़्तसर अ़र्से में कई उ़लूमे ज़ाहिरी ह़ासिल किये लेकिन अगर कोई कुन्द ज़ेहन हो तो उसे भी घबराना नहीं चाहिये क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन्सान को जो हिम्मत, अ़ज़्म और हौसला अ़ता फ़रमाया है इस की बरकत से कई मुश्किलात आसान हो जाती हैं नीज़ मेह़नत, लगन और मुसलसल कोशिश की बरकत से राह में ह़ाइल तमाम रुकावटें ख़ुद ही हटती चली जाती हैं जैसा कि **सिलसिलए क़ादिरिय्या रज़विय्या** के मश्हूर बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना जमालुल औलिया क़ादिरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُاللہِ الْقَوِی का ह़ाफ़िज़ा पैदाइशी त़ौर पर काफ़ी कमज़ोर था, इसी लिये मद्रसे के त़लबा आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का मज़ाक़ उड़ाया करते थे, जब येह सिलसिला मज़ीद बढ़ा और त़लबा के रवय्ये में ज़र्रा बराबर तब्दीली नहीं आई तो आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ दिल बरदाश्ता हो कर जंगल की जानिब निकल गए जब आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को ग़ाइब हुवे तीन दिन गुज़र गए तो आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के उस्ताज़ अ़ल्लामा क़ाज़ी जिया ज़ियाउद्दीन क़ादिरी رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को फ़िक्र लाह़िक़ हुई, वोह आप की तलाश में निकले और ढूंडते हुवे उसी जंगल में पहुंच गए, क्या देखते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना जमालुल औलिया क़ादिरी رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ एक ग़ार में छुपे बैठे हैं। क़ाज़ी जिया رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने क़रीब जा कर मद्रसा छोड़ने की वज्ह मा'लूम की तो आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

www.dawateislami.net

ने वज्ह बयान करते हुवे कहा : "त़लबा मेरी कुन्द ज़ेहनी पर हंसते हैं।" क़ाज़ी जिया رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने जब येह सुना तो जोश में आ कर इरशाद फ़रमाया : "उठो ! मैं ने तुम्हें ज़हीन कर दिया।"[1]

हज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी जिया رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की मुबारक ज़बान से निकलने वाले येह कलिमात बारगाहे इलाही में मक़्बूल हुवे और आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने ज़हानत और कुव्वते हाफ़िज़ा की बदौलत फ़िक़्ह, उसूले फ़िक़्ह और उ़लूमे अ़रबिय्या में महारत ह़ासिल की और आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की कुव्वते हाफ़िज़ा शोहरत का सबब बनी। सारी ज़िन्दगी दर्सो तदरीस में मश्ग़ूल रहे और अ़वामो ख़्वास की इल्मी प्यास को बुझाया। ह़ज़रते अ़ल्लामा मीर सय्यिद मुह़म्मद कालपवी तिरमिज़ी अल ह़सनी अबुल उ़लाई क़ादिरी, साहि़बे मुनाज़िरए रशीदिया आ़लिमे कबीर ह़ज़रते मौलाना मुह़म्मद रशीद उ़स्मानी जोनपुरी और ह़ज़रते सय्यिदुना मुल्ला जीवन के उस्ताद अ़ल्लामा लुत़्फ़ुल्लाह कोरवी (رَحْمَةُاللهِ تعالٰی عَلَيْهِم) का शुमार आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के शागिर्दों में होता है। ह़ज़रते सय्यिदुना जमालुल औलिया क़ादिरी عَلَيْهِ رَحْمَةُاللهِ الْقَوِی सिलसिलए आ़लिया क़ादिरिय्या के मशाइख़ में से हैं।

ख़ानए दिल को ज़िया दे रूए ईमां को जमाल
शह ज़िया मौला जमालुल औलिया के वासित़े

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

---

(1).....तारीख़े मशाइख़े क़ादिरिय्या, 2 / 90 माख़ूज़न

www.dawateislami.net

दादा की वफ़ात की पेशगी ख़बर दे दी

बचपन में एक दिन ह़ज़रते **साबिरे** पाक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने बाबा फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से अ़र्ज़ की : आज से तीन साल बा'द मेरे दादाजान विसाल फ़रमा जाएंगे । येह सुन कर बाबा फ़रीद رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : बेटा ! आप के दादा तो बग़दाद शरीफ़ में हैं और आप यहां ? (फिर आप को कैसे मा'लूम हुवा कि तीन साल बा'द ऐसा होगा) अ़र्ज़ की : अभी मैं ने अपने क़ल्ब की त़रफ़ देखा तो वालिदे माजिद की सूरत सामने आ गई और आप ने सीधे हाथ की तीन उंगलियां मेरी त़रफ़ उठाईं और येह (दादाजान के) विसाल का इशारा है । ह़ज़रते बाबा फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने आप की फ़िरासत देख कर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को सीने से लगा लिया ।[1]

औलिया भी ग़ैब जानते हैं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! फ़ैज़ाने अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से औलियाए उ़ज़्ज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام को भी इ़ल्मे ग़ैब अ़त़ा किया जाता है चुनान्चे, इस ज़िम्न में अकाबिरीने उम्मत के अक़्वाल मुलाह़ज़ा फ़रमाइये :

(1) ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ली क़ारी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه शैख़े कबीर ह़ज़रते अबू अ़ब्दुल्लाह शीराज़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से नक़्ल फ़रमाते हैं : हमारा अ़क़ीदा है

---

1 .....तज़्किरए ह़ज़रते **साबिर** कलयर, स. 36 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

कि बन्दा तरक़्क़िये मक़ामात पा कर सिफ़ते रूहानी तक पहुंचता है उस वक़्त उसे इल्मे ग़ैब ह़ासिल होता है।[1]

(2) सिलसिलए आ़लिया नक़्शबन्दिया के इमाम ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ज़ीज़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाया करते : "उस गुरौहे औलिया की नज़र में ज़मीन दस्तर ख़्वान की त़रह़ है।"[2] या'नी जिस त़रह़ दस्तर ख़्वान की हर चीज़ नज़र आ जाती है इसी त़रह़ ज़मीन की हर चीज़ उन को दिखाई देती है।

(3) ह़ज़रते ख़्वाजा बहाउल ह़क़्क़े वद्दीन नक़्शबन्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی येह क़ौल नक़्ल कर के फ़रमाते : "हम कहते हैं कि (ज़मीन उन के लिये) नाख़ुन की सत़ह़ की त़रह़ है, कोई चीज़ उन की नज़र से ग़ाइब नहीं।"[3]

(4) हमारे ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم "क़सीदए ग़ौसिया" में फ़रमाते हैं :

نَظَرْتُ اِلٰی بِلَادِ اللهِ جَمْعاً   کَخَرْدَلَةٍ عَلٰی حُکْمِ التِّصَالِیْ

या'नी मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सारे शहरों को इस त़रह़ देख लिया जैसे राई के चन्द दाने मिले हुवे हों।

(5) ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی ने अख़्बारुल अख़्यार में हुज़ूरे ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم का येह इरशादे मुअ़ज़्ज़म नक़्ल किया है : "अगर शरीअ़त ने मेरे मुंह में लगाम न डाली होती तो मैं तुम्हें बता देता कि तुम ने घर में क्या खाया है और क्या रखा

---

1 ... مرقاۃ المفاتیح، کتاب الایمان، الفصل الاول، ۱/ ۱۲۸، تحت الحدیث: ۲

2 ... نفحات الانس مترجم، ص۳۸۷

3 ... نفحات الانس مترجم، ص۳۸۷

www.dawateislami.net

है, मैं तुम्हारे ज़ाहिरो बात़िन को जानता हूं क्यूंकि तुम मेरी नज़र में आर पार नज़र आने वाले शीशे (या'नी कांच) की त़रह़ हो।''[1]

(6) ह़ज़रते ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : आ़रिफ़ों का मक़ाम बहुत बुलन्द है जब वोह उस मक़ाम पर पहुंच जाते हैं तो तमाम दुन्या व माफ़ीहा (या'नी जो कुछ दुन्या में है) को अपनी दो उंगलियों के दरमियान देखते हैं।[2]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मेरे दिल का इ़ल्म अ़लाउद्दीन के पास है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दिल तमाम जिस्म का ह़ाकिम और इ़ल्मो ह़िक्मत का सर चश्मा है। इ़ल्म के नूर से दिल का मुनव्वर होना दुन्या व आख़िरत दोनों ही में कामयाबी का ज़रीआ़ है। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली अह़मद **साबिर** رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ह़ज़रते बाबा फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के फ़ैज़ान से फ़ैज़याब हुवे और आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के उ़लूमे क़ल्ब के वारिस क़रार पाए जैसा कि ह़ज़रते बाबा फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाया करते : मेरे सीने का इ़ल्म निज़ामुद्दीन (औलिया) के पास है और दिल का इ़ल्म अ़लाउद्दीन (अ़ली अह़मद **साबिर**) के पास है।[3]

---

1 ... اخبار الاخیار، ص ۱۵

2 ... اخبار الاخیار، ص ۲۳

3 .....सियरुल अक़्त़ाब मुतर्जम, स. 199 मुलख़्ख़सन, ख़ज़ीनतुल अस्फ़िया मुतर्जम, 2 / 153 मुलख़्ख़सन, इक़्तिबासुल अन्वार, स. 498 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

ख़िलाफ़त की अज़ीमुश्शान महफ़िल

रमज़ानुल मुबारक में बा'द नमाज़े तहज्जुद हज़रते बाबा फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه कुछ देर के लिये आराम फ़रमा हुवे तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की आंख लग गई। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने देखा कि एक ऐसे मक़ामे पुर अन्वार में अपने पीरो मुर्शिद हज़रते ख़्वाजा क़ुत़्बुद्दीन बख़्तियार काकी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के हमराह मौजूद हैं कि हर त़रफ़ नूर ही नूर है। एक आ़लीशान दरबार सजा है नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जल्वा अफ़रोज़ हैं। नीज़ सिलसिलए चिश्तिया के तमाम बुज़ुर्ग भी ह़स्बे मरातिब अपनी अपनी निशस्त गाहों पर मौजूद हैं। हज़रते बाबा फ़रीद رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के पीरो मुर्शिद हज़रते ख़्वाजा क़ुत़्बुद्दीन बख़्तियार काकी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने हुक्म दिया : मख़्दूम अ़ली अह़मद (**साबिर**) को आक़ाए दो जहां صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में पेश कीजिये। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने ह़स्बे इरशाद हज़रते सय्यिदुना अ़ली अह़मद **साबिर** رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه को बारगाहे रिसालत में पेश कर दिया। आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना अ़ली अह़मद **साबिर** رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की पुश्त पर सीधे कन्धे की जानिब बोसा दिया और फ़रमाया : "هٰذَا وَلِیُّ الله" इस के बा'द वहां मौजूद तमाम बुज़ुर्गों और मलाइका ने आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इत्तिबाअ़ करते हुवे उसी मक़ाम पर बोसा दिया और येह कहा : "هٰذَا وَلِیُّ الله" फिर हर त़रफ़ से मुबारक बाद का सिलसिला शुरूअ़ हो गया। इन मुबारक बाद की सदाओं से बाबा साह़िब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की आंख खुल गई।

www.dawateislami.net

अगले रोज़ ह़ज़रते बाबा फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने एक आ़लीशान मह़फ़िल का इनइ़क़ाद फ़रमाया जिस में ह़ज़रते शैख़ अबुल ह़सन शाज़ली, ह़ज़रते शैख़ ह़मीदुद्दीन नागोरी, ह़ज़रते शाह मुनव्वर अ़ली इलाहाबादी, ह़ज़रते शैख़ बहाउद्दीन ज़करिया मुल्तानी, ह़ज़रते शैख़ अबुल क़ासिम गिरगानी (رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمۡ اَجۡمَعِیۡن) वग़ैरा बड़े बड़े उ़लमा और औलिया शरीक हुवे। इन तमाम औलियाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام की मौजूदगी में ह़ज़रते बाबा फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने अपना ख़्वाब बयान फ़रमाया जिसे सुनते ही वहां मौजूद तमाम बुज़ुर्गों ने यके बा'द दीगरे आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की मोहरे विलायत को बोसा दिया और "هٰذَا وَلِیُّ اللّٰه" कह कर मुबारक बाद दी । इस के बा'द ह़ज़रते बाबा फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने शैख़ मख़्दूम (अ़ली अह़मद **साबिर** رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ) को ख़ानदाने चिश्तिया की इमामत व ख़िलाफ़त अ़त़ा फ़रमा कर **अपने दस्ते मुबारक से अपनी बा बरकत टोपी पहनाई और सब्ज़ सब्ज़ इमामे से आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की दस्तार बन्दी फ़रमाई** फिर कलयर शहर की विलायत व ख़िलाफ़त की सनद सब ह़ाज़िरीने मह़फ़िल को सुना कर आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ को अ़त़ा फ़रमाई ।[1]

कलयर की ख़िलाफ़त

ह़ज़रते बाबा फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ जब किसी को ख़िलाफ़त अ़त़ा फ़रमा कर किसी अ़लाक़े की जानिब रवाना फ़रमाते तो

1 .....तज़किरए ह़ज़रते **साबिर** कलयर, स. 47 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

नसीह़त के मदनी फूल भी ज़रूर अ़त़ा फ़रमाया करते। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली अह़मद **साबिर** رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को मुर्शिद की इस अदा का इ़ल्म था लिहाज़ा जब आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने कलयर जाने से क़ब्ल बारगाहे मुर्शिद में अ़र्ज़ की : बन्दे के ह़क़ में क्या फ़रमान है ? तो ह़ज़रते बाबा फ़रीद رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इरशाद फ़रमाया : "ज़िन्दगी राह़त से गुज़रेगी।" पस आख़िर उ़म्र तक आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ज़िन्दगी राह़त से गुज़री आप बड़े ख़ुशबाश और कुशादा पेशानी थे।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! राहे ख़ुदा में आने वाली तक्लीफ़ों और मुश्किलात को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दे रह़मते इलाही और रब्बुल अनाम عَزَّوَجَلَّ का इन्आ़म समझते हैं क्यूंकि मुश्किलात पर सब्र करने से दरजात बुलन्द होते हैं, इसी लिये बाबा फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه पर आने वाली मुश्किलात को राह़त का सबब क़रार दिया।

कलयर आमद

जब आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه 10 जुल ह़िज्जा सिने 646 हिजरी या सिने 650 हिजरी में 33 साल की उ़म्र में कलयर तशरीफ़ लाए तो येह एक अ़ज़ीमुश्शान और बा रौनक़ शहर था। दौलत की फ़िरावानी, वसीओ़ अ़रीज़ इ़मारतें और मुज़य्यन व आरास्ता मकानात ने इस शहर को मज़ीद ख़ूब सूरत बना दिया था लेकिन इस शहर का ज़ाहिर जिस क़दर रोशन था इस शहर के मकीनों का बात़िन उसी क़दर तारीक था। येही वज्ह है

1 .....मिरआतुल असरार, स. 856 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

कि येह लोग हज़रते सय्यिदुना अ़ली अह़मद **साबिर** رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ के साथ इन्तिहाई बद सुलूकी से पेश आए।[1]

आज येह सुन्नत भी अदा हो गई !

आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की तशरीफ़ आवरी वहां के क़ाज़ी को एक आंख न भाई। उस ने आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ के ख़िलाफ़ कलयर के क़ियामुद्दीन नामी रईस को वरग़लाया, रईस भी क़ाज़ी की बातों में आ गया। जब हज़रते सय्यिदुना अ़ली अह़मद **साबिर** رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ से उस रईस का सामना हुवा तो उस ने आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ से कहा : "अगर आप इमामत और ख़िलाफ़त के दा'वेदार हैं तो बताइये मेरी तीन माह से ग़ाइब ख़ूब सूरत और क़द आवर सब्ज़ रंग वाली बकरी कहां है ? अगर बता देंगे तो हम आप को अपना इमाम मान कर आप की बैअ़त कर लेंगे।" आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने उस रईस की दस्त्गीरी फ़रमाते हुवे आ़लमे अरवाह़ की जानिब तवज्जोह फ़रमाई और हाथ उठा कर फ़रमाया : "ऐ बकरी के खाने वालो ! निकल आओ।" लम्ह़ा भर में वोह तमाम के तमाम लोग आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की बारगाह में ह़ाज़िर हो गए, आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने इरशाद फ़रमाया : "तुम लोगों ने रईस की बकरी पकड़ कर खा ली है, इस की तफ़्सील बयान करो।" रईस के ख़ौफ़ से उन तमाम लोगों ने इन्कार किया तो आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने नर्मी से इरशाद फ़रमाया : "बेहतर येही है कि खुद अपना अपना ह़ाल बयान कर दो वरना ज़रा सी देर में

1.....मह़फ़िले औलिया, स. 383 मुलख़्ख़सन, ह़ज़रते मख़्दूम अ़लाउद्दीन अ़ली अह़मद **साबिर** कलयरी, स. 68 माख़ूज़न

www.dawateislami.net

पर्दा फ़ाश हो जाएगा और फिर शर्मिन्दगी उठाना पड़ेगी।" येह सुन कर भी वोह लोग मुसलसल इन्कार ही करते रहे तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने रईस से इरशाद फ़रमाया : आप अपनी बकरी का नाम पुकारिये। जैसे ही उस ने "ह़रमना" कह कर आवाज़ दी तो बकरी को हड़प कर जाने वालों के पेट से येह आवाज़ आई : "मैं इन लोगों के पेट में हूं, इन्हों ने आधी रात को चाहे सदरक़ के कनारे पर ज़ब्ह़ कर के मेरा गोश्त भून कर खाया था और हड्डियां, खाल में रख कर कूंएं में फेंक दी हैं।" येह सुन कर रईस ने अ़र्ज़ की : "**आप बेशक अक़्ताब में से हैं !**" आगे बढ़ कर बैअ़त करना ही चाहता था कि क़ाज़ी ने उसे रोक लिया और उस के कान में कहा : "इस के धोके में मत आना येह बहुत बड़ा जादूगर मा'लूम होता है।" येह सुन कर रईस का दिल लम्ह़ा भर में पलट गया, उस के क़दम रुक गए और इस क़दर रोशन करामत देखने के बा वुजूद ज़बान से बद गुमानी के ज़हर में बुझा हुवा तीर निकला : "**मुझे तो तुम क़ुत़ुब नहीं जादूगर लगते हो !**" येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली अह़मद **साबिर** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه मुस्कुरा दिये और अ़फ़्वो दर गुज़र की मा'नवी करामत का इज़्हार करते हुवे यूं फ़रमाया : اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ आज येह सुन्नते नबवी भी अदा हो गई कि मुझे जादूगर कहा गया।(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली अह़मद **साबिर** कलयरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की मुबारक सीरत में नेकी की दा'वत की धूमें मचाने वाले मुबल्लिग़ीन के लिये एक मदनी फूल येह भी है कि

1 .....तज़्किरए ह़ज़रते **साबिर** कलयर, स. 59 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

नेकी की दा'वत में जिस क़दर आज़माइशें आईं उन का मुक़ाबला करने के लिये प्यारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर आने वाली आज़माइशों को याद कीजिये क्यूंकि इस की बरकत से ह़ौसला पस्त नहीं होगा और न ही शैत़ान इस राह में रुकावट बन सकेगा।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के वली की दिल आज़ारी का अन्जाम

जब ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली अह़मद **साबिर** कलयरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه कलयर तशरीफ़ लाए उस वक़्त वहां दौलत मन्द उमरा की एक बड़ी ता'दाद आबाद थी, जुमुए़ की अदाएगी के लिये येह उमरा हाथियों पर सुवार हो कर मस्जिद आते और अपने ग़ुरूर व तकब्बुर की तस्कीन के लिये अव्वलीन सफ़ों में ही बैठना पसन्द करते, किसी ग़रीब व मिस्कीन को मजाल न होती कि इन सफ़ों में बैठ जाए अगर कोई ग़लती से बैठ भी जाता तो उसे डरा धमका कर पीछे कर दिया करते, येह लोग ग़रीबों को अपना ग़ुलाम समझते थे येही कैफ़िय्यत शहर के क़ाज़ी व ह़ाकिम की भी थी। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इन की इस्लाह़ के लिये ख़ूब कोशिश फ़रमाई लेकिन ह़ाकिम व उमरा दौलत के नशे में चूर थे और शहर के क़ाज़ी को अपना मन्सब छिन जाने का ख़ौफ़ था इस वज्ह से इन दोनों त़बक़ों ने इस्लाह़ ख़ुशदिली से क़बूल करने के बजाए आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का मज़ाक़ उड़ाना शुरूअ़ कर दिया।

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली अह़मद **साबिर** कलयरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को पंज वक़्ता नमाज़े बा जमाअ़त की आ़दत तो बचपन ही से थी, जब आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه कलयर तशरीफ़ लाए तब भी तमाम तर आज़माइशों

www.dawateislami.net

और मुश्किलात के बा वुजूद मस्जिद की ह़ाज़िरी की प्यारी प्यारी आ़दत बर क़रार रही । जब जुमुआ़ आया तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه नमाज़े जुमुआ़ की अदाएगी के लिये मस्जिद तशरीफ़ लाए और पहली सफ़ में जल्वा अफ़रोज़ हो गए, ह़स्बे मा'मूल रुअसा और उमरा ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को सफ़े अव्वल से मह़रूम कर दिया, जब दूसरे और तीसरे जुमुए़ भी पहली सफ़ से मह़रूमी का सिलसिला हुवा तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपने पीरो मुर्शिद बाबा फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को मक्तूब के ज़रीए़ तमाम अह़वाल से आगाह फ़रमाया, मुर्शिद ने जवाबी मक्तूब में येह इरशाद फ़रमाया : "कलयर तुम्हारी बकरी है तुम्हें इजाज़त है दूध पियो या गोश्त खाओ ।" येह इजाज़त पा कर जब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه चौथे जुमुए़ मस्जिद की पहली सफ़ में तशरीफ़ फ़रमा हुवे तो एक बार फिर उमरा ने आप को पीछे तशरीफ़ ले जाने पर मजबूर कर दिया, इस बार आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه मस्जिद से बाहर तशरीफ़ लाए और इरशाद फ़रमाया : **"ऐ मस्जिद ! इमाम तो अपना काम ख़त्म कर चुका और तू अभी तक खड़ी है ! तू भी सजदा कर ।"** ज़बाने मुबारक से येह अल्फ़ाज़ अदा होते ही मस्जिद की छत गिर गई और वलिय्युल्लाह को सफ़े अव्वल से मह़रूम कर के दिल आज़ारी करने वाले मुतकब्बिर उमरा अपने अन्जाम को पहुंचे ।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के औलिया की गुस्ताख़ी तबाही व बरबादी का सबब बन जाती है,

1 .....मह़फ़िले औलिया, स. 383,384 मुलख़्ख़सन, ख़ज़ीनतुल अस्फ़िया, 2 / 155 माख़ूज़न, **अल्लाह** के ख़ास बन्दे, स. 584 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

लिहाज़ा कभी भी किसी नेक बन्दे बल्कि आ़म मुसलमान की भी दिल आज़ारी मत कीजिये। हर इस्लामी भाई को चाहिये कि पहली फ़ुरसत में अपने घर बार, अ़ज़ीज़ो अक़ारिब, महल्ला दारों, मार्केट या दफ़्तर में साथ काम करने वालों, साथ पढ़ने वालों अल ग़रज़ जिन जिन से उस का वासिता़ पड़ता है, उन के बारे में दियानत दारी के साथ सोचे कि उन की ग़ीबत, चुग़ल ख़ोरी, ह़क़ तलफ़ी और दिल आज़ारी का सिलसिला तो नहीं ? अगर इन सुवालात का जवाब हां में मिले तो फ़ौरन तौबा कीजिये और आइन्दा के लिये येह निय्यत भी करे कि अगर मेरी वज्ह से किसी मुसलमान की दिल आज़ारी हो गई तो उसी वक़्त आ़जिज़ी के साथ मुआ़फ़ी भी मांग लूंगा। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अ़ब्द व मा'बूद के माबैन फ़र्क़

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली अह़मद **साबिर** कलयरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अक्सर फ़रमाते : बन्दे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के माबैन येह फ़र्क़ है कि बन्दा खाने का मोह़ताज है और ख़ुदा इस से मुनज़्ज़ा व पाक है।[1]

नमाज़ से मह़ब्बत

आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को नमाज़ से बेह़द मह़ब्बत थी और इस मह़ब्बत की वज्ह आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने येह बयान फ़रमाई : नमाज़ भी क्या अच्छी चीज़ है कि हुज़ूरी (की बरकत) से दरबार (या'नी दरबारे

1 .....तज़किरए ह़ज़रते **साबिर** कलयर, स. 83 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

इलाही) में ले आई है (या'नी नमाज़ दरबारे इलाही में ह़ाज़िरी का सबब बनने की वज्ह से उ़म्दा इ़बादत है) ।(1)

लिबास

आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का लिबास कुर्ता, तहबन्द और इ़मामा शरीफ़ पर मुश्तमिल हुवा करता ।(2)

बा इ़मामा रहना अ़क़्लमन्दी की अ़लामत है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इ़मामा शरीफ़ सर की ज़ीनत, पाबन्दिये सुन्नत की पहचान, मोमिन की आन बान और उ़लमा, फ़ुक़हा व बुज़ुर्गाने सलफ़ व ख़लफ़ की शान है इसे छोड़ना सबबे नुक़्सान है जब कि नंगे सर रहने की आ़दत, नंगे सर रास्तों में चलना और इसी त़रह़ मसाजिद में नमाज़ के लिये दाख़िल हो जाना अच्छी आ़दत नहीं । उ़लमा व सुलह़ा तो सर ढांप कर रहते ही थे, आ़म शुरफ़ा भी इसे तहज़ीब और शराफ़त का ह़िस्सा समझते येही वज्ह है कि ह़ज़रते अ़ल्लामा इब्ने जौज़ी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : अ़क़्लमन्द आदमी से येह बात पोशीदा नहीं है कि नंगे सर रहना अच्छी आ़दत नहीं, क्यूंकि इस में तर्के अदब और मुरव्वत की ख़िलाफ़ वर्ज़ी पाई जाती है ।(3) सर ढांपने की किस क़दर अहम्मिय्यत है इस का अन्दाज़ा इस रिवायत से ब ख़ूबी लगाया जा

1.....तज़्किरए ह़ज़रते **साबिर** कलयर, स. 82 मुलख़्ख़सन

2.....ह़ज़रते मख़्दूम अ़लाउद्दीन अ़ली अह़मद **साबिर** कलयरी, स. 80 मुलतक़त़न

3 . . . تلبیس ابلیس، الباب العاشر فی ذکر تلبیسہ علی الصوفیۃ الخ، فصل فی ذکر الادلۃ علی کراہیۃ الغنا الخ ص ۳۱۹

www.dawateislami.net

सकता है चुनान्चे ह़ज़रते वासिला बिन अस्क़अ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "दिन में सर ढांपना अ़क़्लमन्दी है।"[1] लिहाज़ा हमें भी चाहिये न सिर्फ़ नमाज़ के वक़्त अपने रब के हुज़ूर सर ढांप कर ह़ाज़िर हों बल्कि हर वक़्त ही इ़मामा शरीफ़ सजाए रखें कि इस की बड़ी बरकतें हैं जैसा कि

बुर्दबार बनने का आसान अ़मल

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا रिवायत करते हैं : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : اِعْتَمُّوْا تَزْدَادُوْا حِلْمًا या'नी इ़मामा बांधो तुम्हारा ह़िल्म बढ़ेगा।[2]

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : (इ़मामा बांधो) तुम्हारा ह़िल्म बढ़ेगा और तुम्हारा सीना कुशादा होगा क्यूंकि ज़ाहिरी वज़्अ़ क़त़्अ़ का अच्छा होना इन्सान को सन्जीदा और बा वक़ार बना देता है नीज़ ग़ुस्से, जज़्बाती पन और ख़सीस ह़रकात से बचाता है।[3]

आप की ग़िज़ा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़िज़ा इन्सान के ज़ाहिरो बात़िन दोनों पर असर करती है येही वज्ह है कि हमारे बुज़ुर्गाने दीन (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن) निहायत ही सादा ग़िज़ा पर क़नाअ़त किया करते।

---

1 ... کنز العمال، کتاب المعیشۃ والعادات، فرع فی العمائم، جزء: ۱۵، ۸/۱۳۳، حدیث: ۴۱۱۳۶ مختصراً

2 ... معجم کبیر، عبداللہ بن العباس، ۱۲/۱۷۱، حدیث: ۱۲۹۴۶

3 ... فیض القدیر، حرف الھمزۃ، ۱/۷۰۹، تحت الحدیث: ۱۱۴۲

www.dawateislami.net

दर अस्ल येह हज़रात खाने के लिये नहीं जीते बल्कि जीने के लिये खाना तनावुल फ़रमाते। हज़रते सय्यिदुना अ़ली अह़मद **साबिर** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अक्सर रोज़े से रहते, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अक्सर पानी में उबला हुवा बे नमक गूलर[1] तनावुल फ़रमाते, बस येह ही आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ख़ास गिज़ा थी।[2]

अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपनी मायानाज़ तालीफ़ फ़ैज़ाने सुन्नत में फ़रमाते हैं :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! खाना कम खाने के साथ साथ बिल खुसूस मैदा, मिठास व चिकनाहट और इस की बनावटों के इस्ति'माल में (तबीब के मश्वरे के मुताबिक़) कमी रखने से बदन के वज़्न में कमी आती, उभरा हुवा पेट अस्ली हालत पर आता और आदमी खुश अन्दाम (या'नी SMART) रहता है। कम खाने वाले हल्के बदन वाले मुसलमान को खुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ पसन्द फ़रमाता है चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم ने इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को तुम में सब से ज़ियादा वोह बन्दा पसन्द है जो कम खाने वाला और खफ़ीफ़ (या'नी हल्के) बदन वाला है।[3]

---

1 .....अन्जीर की तरह का एक रूएंदार फल है। इसे हिन्दी में गूलड़ और अंग्रेज़ी में Wild Figs कहते हैं। कच्चे फल का रंग सब्ज़ जब कि पके हुवे का सुर्ख़ होता है। (किताबुल मुफ़रिदात, स. 424)

2 .....सियरुल अक़्ताब मुतर्जम, स. 200 मुलख़्ख़सन, सिफ़ातुल कामिलीन, स. 141

3 ...الجامع الصغير، ص ٢٠، حديث: ٢٢١

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अ़मल का जज़्बा बढ़ाने के लिये मदनी माह़ोल ज़रूरी है, वरना आ़रिज़ी त़ौर पर जज़्बा पैदा होता भी है तो अच्छी सोह़बत के फ़ुक़्दान (या'नी कमी) के सबब इस्तिक़ामत नहीं मिल पाती। लिहाज़ा आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत ह़ासिल करने के लिये मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र को अपना मा'मूल बना लीजिये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी की बरकत से हर त़रफ़ सुन्नतों की धूम धाम है। आइये दा'वते इस्लामी की एक ईमान अफ़रोज़ "बहार" से अपने क़ल्बो जिगर को गुले गुलज़ार कीजिये। चुनान्चे,

एक ग़ैर मुस्लिम का क़बूले इस्लाम

तह़सील टांडा ज़िल्अ़ आम्बेडकर नगर (युपी हिन्द) के एक इस्लामी भाई का कुछ इस त़रह़ बयान है : मैं कुफ़्र की तारीक वादियों में भटक रहा था, एक दिन किसी ने मक्तबतुल मदीना का एक रिसाला **एह़तिरामे मुस्लिम** तोह़्फ़े में दिया मैं ने पढ़ा तो ह़ैरत ज़दा रह गया कि जिन मुसलमानों को मैं ने हमेशा नफ़रत की निगाह से देखा है उन का मज़ह़ब "इस्लाम" आपस में इस क़दर अम्नो आश्ती का पयाम देता है ! रिसाले की तह़रीर तासीर का तीर बन कर मेरे जिगर में पैवस्त हो गई और मेरे दिल में इस्लाम की मह़ब्बत का चश्मा मोजें मारने लगा। एक दिन मैं बस में सफ़र कर रहा था कि चन्द दाढ़ी और इ़मामे वाले इस्लामी भाइयों का क़ाफ़िला भी बस में सुवार हुवा, मैं देखते ही समझ गया कि येह मुसलमान हैं, मेरे दिल में इस्लाम की मह़ब्बत तो पैदा हो ही

www.dawateislami.net

चुकी थी लिहाज़ा मैं एह़तिराम की नज़र से उन को देखने लगा, इतने में उन में से एक इस्लामी भाई ने नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शान में ना'त शरीफ़ पढ़नी शुरूअ़ कर दी, मुझे उस का अन्दाज़ बेह़द भला लगा, मेरी दिलचस्पी देख कर उन में से एक ने मुझ से गुफ़्तगू शुरूअ़ कर दी वोह समझ गया कि मैं मुसलमान नहीं हूं, उस ने बड़े दिल नशीन अन्दाज़ में मुझ से कहा : "मैं आप को इस्लाम क़बूल करने की दरख़्वास्त करता हूं।" रिसाला एह़तिरामे मुस्लिम पढ़ कर मैं चूंकि पहले ही दिली तौ़र पर इस्लाम का गिरवीदा हो चुका था। उस के आ़जिज़ाना अन्दाज़ ने दिल पर मज़ीद असर डाला, मुझ से इन्कार न बन पड़ा, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं ने सच्चे दिल से इस्लाम क़बूल कर लिया।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ येह बयान देते वक़्त मुसलमान हुवे मुझे चार माह हो चुके हैं, मैं पाबन्दी से नमाज़ पढ़ रहा हूं, दाढ़ी सजाने की निय्यत कर ली है, दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो कर मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र की सआ़दत भी पा रहा हूं।[1]

काफ़िरों को चलें मुशरिकों को चलें दा'वते दीन दें क़ाफ़िले में चलो
दीन फैलाइये सब चले आइये मिल के सारे चलें क़ाफ़िले में चलो

मेहमानों की ख़ैर ख़्वाही फ़रमाते

ह़ज़रते सय्यिद अ़लाउद्दीन अ़ली अह़मद **साबिर** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه पानी में उबले हुवे गूलर पसन्द फ़रमाते लेकिन जब मह़बूबे इलाही

1.....फ़ैज़ाने सुन्नत, 1 / 258

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिद मुहम्मद निज़ामुद्दीन औलिया رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के यहां से कोई शख़्स आता तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ख़ुद्दाम से फ़रमाते : भाई ! येह देहली से आए हैं, इन के खाने में नमक ज़रूर शामिल करना ।[1]

ज़िन्दगी के हर पहलू से सब्र झलकता

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हज़रते सय्यिदुना अ़ली अहमद **साबिर** कलयरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه कम खाते, कम गुफ़्तगू फ़रमाते और कम सोते, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ज़ियादा तर तन्हाई में रह कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत में मसरूफ़ रहा करते और बा'ज़ औक़ात कई कई दिन तक फ़ाक़े से रह कर नफ़्स की ख़ूब तरबियत फ़रमाते । हमेशा ज़मीन पर सोते थे और बिछौना वग़ैरा कुछ न बिछाते ।[2]

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की येह तमाम आ़दात इस बात की दलील हैं कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की मुबारक ज़ात सरापा सब्र थी । सब्र की येह अ़ज़ीम दौलत हमें भी ह़ासिल हो सकती है, लेकिन इस के लिये मुसलसल कोशिश ज़रूरी है । अगर आप भी **सब्र** की अ़मली तरबियत ह़ासिल करना चाहते हैं तो इन मदनी फूलों पर अ़मल कीजिये :

(1) सब्र के फ़ज़ाइल पेशे नज़र रखिये

किसी भी नेक काम या अच्छे अ़मल के फ़ज़ाइल पेशे नज़र हों तो उस पर अ़मल करना आसान हो जाता है । सब्र तो वोह

1 .....सियरुल अक़्ताब मुतर्जम, स. 200

2 .....**अल्लाह** के ख़ास बन्दे, स. 576 मुलख़्ख़सन, हज़रते मख़्दूम अ़लाउद्दीन अ़ली अहमद **साबिर** कलयरी, स. 80 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

बाति़नी ख़ूबी है कि जिस के फ़ज़ाइल से कु़रआनो ह़दीस माला माल हैं, साबिरीन के लिये बड़ा इन्आ़म "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का साथ" है चुनान्चे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِیْنَ"

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक अल्लाह साबिरों के साथ है।[1]

येह और इस त़रह़ के दीगर फ़ज़ाइल ज़ेह्न नशीन कर लेने से बड़ी से बड़ी आज़माइश का मुक़ाबला करना आसान हो जाता है।

(2) बारगाहे इलाही में दुआ़ कीजिये

आज़माइश हमें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से तअ़ल्लुक़ क़ाइम करने, उस की बारगाह में फ़रयाद करने का सबब बनती है और जब इस कैफ़िय्यत में बन्दा आहो ज़ारी कर के अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में इल्तिजा करता है तो उस की दुआ़ ज़रूर मक़्बूल होती है लिहाज़ा जब भी कोई मुसीबत दरपेश हो तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से सब्र पर इस्तिक़ामत और उस आज़माइश के ख़त्म हो जाने की दुआ़ कीजिये।

(3) आ़जिज़ी अपना लीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह बात ज़ेह्न नशीन कर लीजिये कि तकब्बुर वोह बरतन है जिस में सब्र का शहद कभी भी नहीं समा सकता लिहाज़ा अगर आप अपनी ज़ात में सब्र पैदा करना चाहते हैं तो आ़जिज़ी अपना लीजिये क्यूंकि आ़जिज़ी ही वोह सिफ़त है जो दूसरे से इन्तिक़ाम के जज़्बे को ख़त्म कर देगी।

---

1 ...پ۲، البقرۃ:۱۵۳

www.dawateislami.net

(4) सब्र में मुसाबक़त का ज़ेह्न बना लीजिये

बे सब्री की सब से बड़ी वज्ह "तबीअ़त में जल्दबाज़ी" है, येह जल्दबाज़ी ही इन्सान को अ़मली मैदान में नाकामो नामुराद करवा देती है बल्कि बा'ज़ औक़ात तो इस जल्दबाज़ी की बदौलत जान से भी हाथ धोना पड़ता है इस की आ़म मिसाल रोड पर होने वाले ह़ादिसे हैं, लिहाज़ा अगर आप दुन्या व आख़िरत में कामयाबी के ख़्वाहिश मन्द हैं तो जल्दबाज़ी की आ़दत ख़त्म कर दीजिये और सब्र में एक दूसरे पर सब्क़त ले जाने की आ़दत अपना लीजिये इस की बरकतें आप ख़ुद महसूस करेंगे।

(5) इन्तिक़ामी कारवाई की आ़दत तर्क कीजिये

सब्र में एक बड़ी रुकावट किसी भी बात पर आग बगूला हो कर इन्तिक़ामी कारवाई करना भी है। इस का आग़ाज़ बुग़्ज़ो कीना से होता है और अन्जाम बा'ज़ औक़ात क़त्लो ग़ारत पर होता है। इन्तिक़ाम की आग को बुझाने के लिये अ़फ़्वो दर गुज़र के ठन्डे पानी का छिड़काव जितना ज़ियादा होगा सब्र करना उतना ही आसान हो जाएगा लिहाज़ा अगर सब्र की आ़दत अपनाना चाहते हैं तो अपने अन्दर इन्तिक़ामी जज़्बात को बेदार करने की बजाए दर गुज़र से काम लीजिये।

(6) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों को याद कीजिये

आज़माइश छोटी हो या बड़ी इस पर वावेला करते हुवे हम येह भूल जाते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हमें बहुत सी ने'मतों से

www.dawateislami.net

नवाज़ा है, अगर हमारी तवज्जोह ऐन इस मुसीबत और परेशानी के वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन ने'मतों की जानिब हो जाए तो कभी भी सब्र का दामन हाथ से न छूटे, लिहाज़ा किसी भी आज़माइश या परेशानी में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मतें हमेशा अपने पेशे नज़र रखिये।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

शबो रोज़ के मा'मूलात

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के शबो रोज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की याद में गुज़रते, लोगों की सोहबत से किनारा कश रहते, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अक्सर ख़ामोश रहा करते, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ख़ामोशी में भी एक कशिश थी और जब कभी आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه कुछ इरशाद फ़रमाते तो फ़क़त एक जुम्ले में कई सुवालों के जवाबात अ़ता फ़रमा देते। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपनी करामतों को छुपाते, अगर कोई उस का ज़िक्र भी करता तो उसे निहायत ख़ूब सूरती से टाल देते, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه तारिकुद्दुन्या बुज़ुर्ग थे लेकिन दुन्या की इस्लाह़ को अपना फ़र्ज़ समझ कर अदा फ़रमाते, इन क़ीमती औसाफ़ की बिना पर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه दुन्या की रौनक़ थे।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दे अपनी ह़यात में और बा'दे वफ़ात इन्हीं औसाफ़ की बिना पर दिलों पर हुकूमत करते हैं, आज के इस पुर फ़ितन दौर में भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के

1 .....हज़रते मख़्दूम अ़लाउद्दीन अ़ली अह़मद **साबिर** कलयरी, स. 81 माख़ूज़न।

www.dawateislami.net

नेक बन्दे इस दुन्या की रौनक़ हैं जिन में से एक **अमीरे अहले सुन्नत** बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه भी हैं। आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के मुबारक मा'मूलात गुफ़्तार व किरदार, सीरत व अख़्लाक़ की अ़ज़मत का ए'तिराफ़ बड़े बड़े उ़लमा व मशाइख़ करते हैं बल्कि एक आ़म इस्लामी भाई भी आप की मुलाक़ात व ज़ियारत की बरकत से अपने दिल की दुन्या को ज़ेरो ज़बर होता महसूस करता है। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की चन्द लम्ह़ों की सोह़बत से तौबा की तौफ़ीक़ मिलती है और नेकियों पर इस्तिक़ामत का ज़ेह्न बनता है, मदनी मुज़ाकरों में आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के मुख़्तसर, जामेअ़ और ख़ूब सूरत मल्फ़ूज़ात से इ़ल्मी उलझनें ह़ल हो जाती हैं मुख़्तसरन येह कि आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के मुबारक मा'मूलात में औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام की सीरत का अ़क्स दिखाई देता है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बारगाहे साबिर में भेज दिया

शम्सुल औलिया ह़ज़रते सय्यिदुना शम्सुद्दीन तुर्क رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه तफ़्सीर व ह़दीस, फ़िक़्ह, रियाज़ी व हिन्दसा जैसे कई उ़लूम पर दस्त्रस रखते थे, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपने वत़न से बाबा फ़रीद गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की बारगाह में ह़ाज़िर हुवे और कुछ अ़र्सा आप की सोह़बत में रहे और ख़िलाफ़त से नवाज़े गए। एक रोज़ बाबा फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से फ़रमाया : "आप का हुसूले

www.dawateislami.net

ने'मत व कमाल दूसरे मुर्शिद पर मौक़ूफ़ है।" येह फ़रमा कर ह़ज़रते सय्यिदुना शम्सुद्दीन तुर्क رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लाउद्दीन अ़ली अह़मद **साबिर** कलयरी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की बारगाह में भेज दिया।[1]

तिलावते क़ुरआन ने कैसा मर्तबा दिया !

जब ह़ज़रते शम्सुद्दीन तुर्क رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इक्तिसाबे फ़ैज़ के लिये कलयर ह़ाज़िर हुवे तो उस वक़्त ह़ज़रते **साबिरे** पाक رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه गूलर के दरख़्त के नीचे तन्हा इ़बादतो रियाज़त में मश्ग़ूल थे, लिहाज़ा आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه भी एक दरख़्त के नीचे तशरीफ़ फ़रमा हो कर तिलावते क़ुरआन करने लगे, जब ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली अह़मद **साबिर** कलयरी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के कानों में कलामे इलाही की मिठास रस घोलने लगी तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه उस जानिब मुतवज्जेह हुवे और जिस सम्त से आवाज़ आ रही थी उसी जानिब चल पड़े, बिल आख़िर एक दरख़्त के नीचे ह़ज़रते सय्यिदुना शम्सुद्दीन तुर्क رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को बैठा पाया। आप भी थोड़े फ़ासिले पर तशरीफ़ फ़रमा हो गए। जब ह़ज़रते सय्यिदुना शम्सुद्दीन رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने तिलावत ख़त्म कर के सर उठाया तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को वहां मौजूद पा कर घबरा गए। लेकिन आप ने निहायत नर्मी से फ़रमाया : "शम्स ! घबराते क्यूं हो ? हम तुम से बहुत ख़ुश हैं।" फिर आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को बैअ़त से मुशर्रफ़ फ़रमाया और अपने मुबारक हाथों से दस्तार बन्दी फ़रमाई। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه एक

1 .....तज़किरए औलियाए पाको हिन्द, स. 76 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

त़वील अ़र्से तक मुर्शिद की ख़िदमत में रहे, वुज़ू भी आप कराते और खाने का इन्तिज़ाम भी फ़रमाते यूं आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه मुर्शिद के ख़िदमत गुज़ार बन गए।(1)

अमीर ख़ुसरू की मेहमान नवाज़ी

बीस बरस से येह मा'मूल रहा कि आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के ख़लीफ़ा ह़ज़रत ख़्वाजा शम्सुद्दीन तुर्क رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه जंगल से गूलर तोड़ कर लाते और उन्हें उबाल कर आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की बारगाह में पेश कर देते। एक दफ़्अ़ा ह़ज़रते सय्यिदुना अमीर ख़ुसरू رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه देहली से आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की बारगाह में ह़ाज़िर हुवे तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने ह़ज़रते सय्यिदुना अमीर ख़ुसरू رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का ख़याल फ़रमाते हुवे इरशाद फ़रमाया : "शम्सुद्दीन ! ख़ुसरू आए हैं, इन की मेहमान नवाज़ी करनी चाहिये ताकि देहली जा कर ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया से येह न कहे कि कलयर में ख़ातिर तवाज़ोअ़ न हुई आज गूलर में थोड़ा नमक भी डाल देना।" ह़ज़रते सय्यिदुना अमीर ख़ुसरू رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه देहली वापस जाते हुवे तबर्रुकन गूलर भी अपने साथ ले गए और उसे सुल्त़ानुल मशाइख़ ह़ज़रते सय्यिद निज़ामुद्दीन औलिया رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की ख़िदमत में पेश किया जिसे आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने आंखों से लगाया और ख़ूब ज़ौक़ शौक़ से तनावुल फ़रमाया।(2)

1.....तज़्किरए औलियाए पाको हिन्द, स. 76 माख़ूज़न
2.....मह़फ़िले औलिया, स. 385 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

हज़रते महबूबे इलाही और हज़रते साबिरे पाक

हज़रते महबूबे इलाही हज़रते सय्यिद मुहम्मद निज़ामुद्दीन औलिया رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ हज़रते **साबिरे** पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ का बेहद एहतिराम फ़रमाते थे । आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पास से जब कोई शख़्स हज़रते **साबिरे** पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ की बारगाह में हाज़िर होना चाहता तो उसे हद दरजा एहतिराम की ताकीद फ़रमाते नीज़ इरशाद फ़रमाते : कोई बात ख़िलाफ़े मिज़ाज न हो । येह दोनों बुज़ुर्ग एक दूसरे से बेहद महब्बत फ़रमाते थे ।(1)

शम्सुद्दीन मेरा दोस्त है

हज़रते सय्यिदुना अ़लाउद्दीन अ़ली अहमद **साबिर** कलयरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ज़बान से निकलने वाले कलिमात बारगाहे इलाही में बहुत जल्द मक़्बूल हो जाया करते इसी लिये आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ का लक़ब सैफ़े लिसान भी है । एक मरतबा आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने हज़रते सय्यिदुना शम्सुद्दीन तुर्क رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ को पानी लाने के लिये भेजा जिस में आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ से कुछ ताख़ीर हो गई, जब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ वापस आए तो हज़रते सय्यिदुना अ़ली अहमद **साबिर** कलयरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ज़बाने मुबारक से येह जुम्ले अदा हो गए : एक पियाला पानी लाने में इतनी ताख़ीर ? शम्सुद्दीन ! क्या दिखाई नहीं देता ? अन्धे हो

(1).....सियरुल अक़्ताब मुतर्जम, स. 200

www.dawateislami.net

गए हो, पानी नज़र नहीं आया था क्या ?" जूंही आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه पानी का पियाला ले कर नोश फ़रमाने के लिये तशरीफ़ फ़रमा हुवे तो हज़रते सय्यिदुना शम्सुद्दीन तुर्क رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के मुंह से दर्द भरी आह निकली फिर फ़ौरन आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की बारगाह में अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! मैं तो अन्धा हो गया ।" येह देख कर हज़रते सय्यिदुना **साबिर** कलयरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه सजदा रेज़ हो गए और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ गुज़ार हुवे : "या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! शम्स तो तेरे इस गुनहगार बन्दे का दोस्त और वाह़िद साथी है तू इस के ह़ाल पर रह़्म फ़रमा ।" जैसे ही दुआ़ ख़त्म हुई हज़रते सय्यिदुना शम्सुद्दीन तुर्क رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की बीनाई वापस आ गई ।

नज़रे साबिर का इन्तिख़ाब

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه हज़रते सय्यिदुना शम्सुद्दीन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से बेह़द मह़ब्बत फ़रमाते, एक मरतबा आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को मुख़ात़ब कर के फ़रमाया : "ऐ शम्स ! तू मेरा फ़रज़न्द है, मैं ने ख़ुदा से चाहा कि मेरा सिलसिला तुझ से जारी हो और क़ियामत तक रहे ।"(1) आख़िरी उ़म्र में आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपना ख़िर्क़ए ख़िलाफ़त हज़रते शैख़ शम्सुद्दीन तुर्क رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को अ़त़ा फ़रमा कर पानीपत का साह़िबे विलायत मुक़र्रर फ़रमाया । आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपने हाथ से ख़िलाफ़त नामा लिख कर इन के ह़वाले किया और इस्मे आ'ज़म जो मशाइख़ से सीना ब सीना

1 .....तज़्किरए औलियाए पाको हिन्द, स. 76

www.dawateislami.net

चला आ रहा था उस की तल्क़ीन फ़रमाई और येह वसिय्यत फ़रमाई : "तीन दिन से ज़ियादा यहां न रहना, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप को पानीपत की विलायत अ़ता फ़रमाई है, वहां जा कर सुकूनत इख़्तियार करना और भटके हुवे लोगों की हिदायत में कमरबस्ता हो जाना, मैं हर जगह तुम्हारा मुआ़विन रहूंगा।" ह़ज़रते शैख़ शम्सुद्दीन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने बारगाहे मुर्शिद में अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! आप की विलायत बाक़ी और पाइन्दा है इस बन्दे का इरादा येह था कि बाक़ी उ़म्र आस्तानए आ़लिया की जारूबकशी करता। अब आप का हुक्म है कि पानीपत जाओ। लेकिन वहां शैख़ शरफ़ुद्दीन बू अ़ली क़लन्दर पानीपती رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه[1] मौजूद हैं मा'लूम नहीं कि वोह मुझ से किस त़रह़ पेश आते हैं ? आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : फ़िक्र मत करो तुम्हारे वहां पहुंचते ही वोह वहां से चले जाएंगे।[2]

मेरा शम्स ही काफ़ी है !

एक मरतबा शैख़ुल मशाइख़ ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का एक मुरीद ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लाउद्दीन **साबिर** कलयरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ह़ज़रते शैख़ शम्सुद्दीन तुर्क के इ़लावा किसी को मुरीद और ख़लीफ़ा नहीं बनाया और मेरे मुर्शिद ह़ज़रते शैख़ निज़ामुद्दीन औलिया ने आस्मान

1.....आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इमामे आ'ज़म की औलाद से हैं। ह़दीक़तुल औलिया, स. 81
2.....इक़्तिबासुल अन्वार, स. 512 मुलख़्ख़सन, तज़किरए औलियाए पाको हिन्द, स. 76 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

पर सितारों की ता'दाद से भी ज़ियादा मुरीद बनाए हैं। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने जवाब दिया : "मेरा शम्स काफ़ी है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्ल से तमाम सितारों पर ग़ालिब है।" देहली आ कर उस ने सारा वाक़िआ शैख़ुल मशाइख़ ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से बयान किया तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : तुम ने हज़रत को क्यूं रन्जीदा किया दूसरी मरतबा ऐसी ह़रकत नहीं होनी चाहिये बेशक उन्हों ने जो कुछ फ़रमाया सह़ीह़ फ़रमाया वोह मुक़र्रबे बारगाहे रब्बानी हैं।(1)

एक मौक़अ़ पर ह़ज़रते अ़लाउद्दीन अ़ली अह़मद **साबिर** कलयरी ने ह़ज़रते सय्यिदुना शम्सुद्दीन तुर्क رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के बारे में फ़रमाया : हमारा शम्स औलिया में सूरज की त़रह़ है।(2)

विसाले मुबारक

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने एक दिन शम्सुद्दीन तुर्क رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से फ़रमाया : जब आप से कोई करामत ज़ाहिर हो तो समझ लीजियेगा कि मेरा इन्तिक़ाल हो गया है।(3) जिस दिन ह़ज़रते सय्यिदुना शम्सुद्दीन तुर्क رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से करामत ज़ाहिर हुई फ़ौरन कलयर शरीफ़ ह़ाज़िर हुवे और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की तजहीज़ो तक्फ़ीन, तदफ़ीन ख़ुद फ़रमाई। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का विसाल 13 रबीउ़ल अव्वल सिने 690 हिजरी मुत़ाबिक़

1.....सियरुल अक़्ताब मुतर्जम, स. 201 मुलख़्ख़सन

2.....तज़्किरए औलियाए पाको हिन्द, स. 78

3.....मह़फ़िले औलिया, स. 386 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

15 मार्च सिने 1291 ईसवी है।[1] आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का मज़ारे पुर अन्वार कलयर शरीफ़ ज़िल्अ़ सहारनपुर (युपी) हिन्द में नहरे गंग के कनारे मर्जउ़ल ख़लाइक़ है।

मज़ार की बे हुर्मती की हाथों हाथ सज़ा

एक काफ़िर आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के मज़ार के पास से गुज़र रहा था, उस ने जब येह देखा कि आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के मज़ारे पुर अन्वार पर कोई नहीं तो उस की निय्यत ख़राब हुई और उसे आप का मज़ारे मुबारक शहीद कर के अपनी इबादतगाह ता'मीर करने की सूझी लिहाज़ा उस ने अपने इस नापाक इरादे को अ़मली जामा पहनाने के लिये एक तीशा (एक औज़ार) लिया और अपने नापाक अ़ज़्म को पूरा करने में जुत गया, जब उस की तवज्जोह मज़ार के रोशनदान की त़रफ़ गई तो तजस्सुस से उस ने रोशनदान से झांक कर अन्दर का मन्ज़र देखना चाहा मगर उस का सर फंस गया और दम घुटने की वज्ह से वोह तड़प तड़प कर मर गया। रात को मज़ार के ख़िदमत गारों के ख़्वाब में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली अह़मद **साबिर** رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ तशरीफ़ लाए और इरशाद फ़रमाया : "एक शख़्स गुस्ताख़ी के इरादे से हमारे मज़ार पर आया था उसे सज़ा तो मिल गई है अब वोह मज़ार के रोशनदान से लटका हुवा है उसे आ कर निकाल दिया जाए।" दूसरी सुब्ह़ वोह ख़िदमत गार अपने साथियों के साथ मज़ार पर ह़ाज़िर हुवे, उस काफ़िर को खींच कर बाहर निकाला और उस की लाश जंगल में फेंक दी।[2]

1.....ख़ज़ीनतुल अस्फ़िया 2 / 159, मह़फ़िले औलिया, स. 386 मुलख़्ख़सन

2.....ख़ज़ीनतुल अस्फ़िया 2 / 158, मुलख़्ख़सन, इक़्तिबासुल अन्वार, स. 505 मुलख़्ख़सन, तज़किरए औलियाए बर्रे सग़ीर, 2 / 5 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वलिय्ये कामिल के मज़ार की बे हुर्मती करने वाले का इ़ब्रतनाक अन्जाम आप ने मुलाह़ज़ा फ़रमाया, येह मदनी फूल ख़ूब ज़ेह्न नशीन कर लीजिये कि "औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام से बुग़्ज़ो अ़दावत रखने और उन की गुस्ताख़ी करने में कोई ख़ैर नहीं बल्कि दुन्या व आख़िरत की बरबादी का ज़रीआ़ है।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों से अ़दावत का सब से बड़ा सबब गुस्ताख़ाने औलिया की सोह़बते बद भी है और इस की नुहूसत की वज्ह से शैत़ान त़रह़ त़रह़ की गुस्ताख़ियां करवाता है लिहाज़ा औलियाए किराम की गुस्ताख़ी करने वालों की सोह़बत से बचने ही में आ़फ़िय्यत है। हुब्बे औलिया बाइ़से फ़ौज़ो फ़लाह़ (कामयाबी) है इस सिलसिले में अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपनी मायानाज़ तालीफ़ फ़ैज़ाने सुन्नत में एक ह़िकायत नक़्ल फ़रमाते हैं : मक्कए मुकर्रमा के एक शाफ़ेई मुजावर का कहना है, मिस्र में एक ग़रीब शख़्स के यहां बच्चे की विलादत हुई उस ने एक समाजी कारकुन से राबित़ा किया, वोह नौमौलूद के वालिद को ले कर कई लोगों से मिला मगर किसी ने माली इमदाद न की, आख़िरे कार एक मज़ार पर ह़ाज़िरी दी, उस समाजी कारकुन ने कुछ इस त़रह़ फ़रयाद की : "या सय्यिदी ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़्म फ़रमाए, आप अपनी ज़ाहिरी ज़िन्दगी में बहुत कुछ दिया करते थे, आज कई लोगों से नौमौलूद के लिये

www.dawateislami.net

मांगा मगर किसी ने कुछ न दिया।" येह कहने के बा'द उस समाजी कारकुन ने ज़ाती त़ौर पर आधा दीनार नौमौलूद के वालिद को उधार पेश करते हुवे कहा : "जब कभी आप के पास पैसों की तरकीब बन जाए मुझे लौटा देना।" दोनों अपने अपने रास्ते हो लिये। समाजी कारकुन को रात ख़्वाब में साहि़बे मज़ार का दीदार हुवा, फ़रमाया : "आप ने मुझ से जो कहा वोह मैं ने सुन लिया था मगर उस वक़्त जवाब देने की इजाज़त न थी, मेरे घरवालों से जा कर कहिये कि वोह अंगीठी (اَن۔گی۔ٹھی) के नीचे की जगह खोदें, एक मश्कीज़ा निकलेगा उस में 500 दीनार होंगे वोह सारी रक़म उस नौमौलूद के वालिद को पेश कर दीजिये।" चुनान्चे, वोह साहि़बे मज़ार के घरवालों के पास पहुंचा और सारा माजरा कह सुनाया। उन लोगों ने निशान देही के मुत़ाबिक़ जगह खोदी और 500 दीनार निकाल कर ह़ाज़िर कर दिये। समाजी कारकुन ने कहा : येह सब दीनार आप ही के हैं, मेरे ख़्वाब का क्या ए'तिबार ! वोह बोले, जब हमारे बुज़ुर्ग दुन्या से पर्दा फ़रमाने के बा'द भी सख़ावत करते हैं तो हम क्यूं पीछे हटें ! चुनान्चे, उन लोगों ने वोह दीनार उस समाजी कारकुन को दिये और उस ने जा कर उस नौमौलूद के वालिद को पेश कर दिये और सारा वाक़िआ़ सुनाया। उस ग़रीब शख़्स ने आधे दीनार से क़र्ज़ा उतारा और आधा दीनार अपने पास रखते हुवे कहा : "मुझे येही काफ़ी है।" बाक़ी सब उसी समाजी कारकुन को देते हुवे कहा : बक़िय्या तमाम दीनार

www.dawateislami.net

ग़रीबो नादार लोगों में तक़्सीम कर दीजिये । रावी का बयान है, मुझे समझ नहीं आती कि इन सब में कौन ज़ियादा सख़ी है ![1]

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो ।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

औलिया बा'दे वफ़ात भी नफ़्अ़ पहुंचाते हैं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! पहले के लोग बुज़ुर्गों के बारे में किस क़दर अच्छा अ़क़ीदा रखते थे और ब वक़्ते ज़रूरत उन से अपनी ह़ाजतें त़लब करते थे । उन का येह ज़ेह्न बना हुवा होता था कि अल्लाह वाले ब अ़त़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ मदद किया करते हैं । बहर ह़ाल औलियाउल्लाह رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی अपने रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ की इनायात से मज़ारात में ह़यात होते हैं, आने जाने वालों की बात सुनते हैं, हिदायत व इस्तिआ़नत करते हैं और अपने घरों के मुआ़मलात की भी ख़बर रखते हैं, जभी तो साह़िबे मज़ार बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने ख़्वाब में जा कर उस समाजी कारकुन की रहनुमाई फ़रमाई और उस नौमौलूद के ग़रीब बाप की दस्त्गीरी (دَسْت۔ گِیری) और माली इमदाद की । ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना इब्ने आ़बिदीन शामी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : औलियाउल्लाह رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में मुख़्तलिफ़ दरजात रखते हैं और ज़ाइरीन को अपने मुआ़रिफ़ो असरार के लिह़ाज़ से नफ़्अ़ पहुंचाते हैं ।[2]

1 ... احیاءعُلوم الدین، کتاب ذم البخل وذم حب المال، حکایات الاسخیاء، ۳/۳۰۹

2 ... رَدُّالْمُحتار، کتاب الصلاۃ، مطلب فی زیارۃ القبور، ۳/۱۷۸، فیضانِ سنت، آدابِ طعام، ۱/۲۰۹

www.dawateislami.net

मजलिसे मज़ाराते औलिया

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दा'वते इस्लामी दुन्या भर में नेकी की दा'वत आ़म करने, सुन्नतों की ख़ुश्बू फैलाने, इ़ल्मे दीन की शम्एं जलाने और लोगों के दिलों में औलियाउल्लाह की मह़ब्बत व अ़क़ीदत बढ़ाने में मसरूफ़ है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ (ता दमे तह़रीर) दुन्या के कमो बेश 200 मुमालिक में इस का मदनी पैग़ाम पहुंच चुका है। सारी दुन्या में मदनी काम को मुनज़्ज़म करने के लिये तक़रीबन 104 से ज़ियादा मजालिस क़ाइम हैं, इन्ही में से एक "मजलिसे मज़ाराते औलिया" भी है जो दीगर मदनी कामों के साथ साथ दर्जे ज़ैल ख़िदमात अन्जाम दे रही है।

1. येह मजलिस औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के रास्ते पर चलते हुवे मज़ाराते मुबारका पर ह़ाज़िर होने वाले इस्लामी भाइयों में मदनी कामों की धूमें मचाने के लिये कोशां है।

2. येह मजलिस ह़त्तल मक़्दूर साह़िबे मज़ार के उ़र्स के मौक़अ़ पर इजतिमाए़ ज़िक्रो ना'त करती है।

3. मज़ारात से मुल्ह़िक़ा मसाजिद में आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िले सफ़र करवाती और बिल ख़ुसूस उ़र्स के दिनों में मज़ार शरीफ़ के इह़ाते में सुन्नतों भरे मदनी ह़ल्क़े लगाती है जिन में वुज़ू, ग़ुस्ल, तयम्मुम, नमाज़ और ईसाले सवाब का त़रीक़ा, मज़ारात पर ह़ाज़िरी के आदाब और इस का दुरुस्त त़रीक़ा नीज़ सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतें सिखाई जाती हैं।

www.dawateislami.net

4. आशिक़ाने रसूल को ह़स्बे मौक़अ़ अच्छी अच्छी निय्यतों मसलन बा जमाअ़त नमाज़ की अदाएगी, दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त में शिर्कत, दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत देने या सुनने, साह़िबे मज़ार के ईसाले सवाब के लिये हाथों हाथ मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र और फ़िक्रे मदीना के ज़रीए़ रोज़ाना मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी या'नी क़मरी माह की पहली तारीख़ को अपने ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाते रहने की तरग़ीब दी जाती है।

5. "मजलिसे मज़ाराते औलिया" अय्यामे उ़र्स में साहिबे मज़ार की ख़िदमत में ढेरों ढेर ईसाले सवाब का तोह़फ़ा भी पेश करती है और साह़िबे मज़ार बुज़ुर्ग के सज्जादा नशीन, ख़ुलफ़ा और मज़ारात के मुतवल्ली साह़िबान से वक़्तन फ़ वक़्तन मुलाक़ात कर के उन्हें दा'वते इस्लामी की ख़िदमात, जामिअ़ातुल मदीना व मदारिसुल मदीना और बैरूने मुल्क में होने वाले मदनी काम वग़ैरा से आगाह रखती है।

6. मज़ारात पर ह़ाज़िरी देने वाले इस्लामी भाइयों को शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की अ़त़ा कर्दा नेकी की दा'वत भी पेश की जाती है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें ता ह़यात औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام का अदब करते हुवे उन के दर से फ़ैज़ पाने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और इन मुबारक हस्तियों के सदक़े दा'वते इस्लामी को मज़ीद तरक़्क़ियां अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मज़ाराते औलिया पर लगाए जाने वाले तरबियती ह़ल्क़ों के मौज़ूआ़त

ह़ल्क़ा नम्बर 1 मज़ाराते औलिया पर ह़ाज़िरी का त़रीक़ा

ह़ल्क़ा नम्बर 2 वुज़ू, ग़ुस्ल और तयम्मुम का त़रीक़ा

ह़ल्क़ा नम्बर 3 नमाज़ का सबक़

ह़ल्क़ा नम्बर 4 नमाज़ का अ़मली त़रीक़ा

ह़ल्क़ा नम्बर 5 राहे ख़ुदा में सफ़र की अहम्मिय्यत (मदनी क़ाफ़िलों की तय्यारी)

ह़ल्क़ा नम्बर 6 दुरुस्त क़ुरआने पाक पढ़ने का त़रीक़ा

ह़ल्क़ा नम्बर 7 नेक बनने और बनाने का त़रीक़ा (मदनी इन्आ़मात)

हिदायात : मदनी ह़ल्क़े मज़ार के इह़ाते के क़रीब हो जिस में दो ख़ैर ख़्वाह मुक़र्रर किये जाएं जो दा'वत दे कर ज़ाइरीन को ह़ल्क़े में शिर्कत करवाएं। हर ह़ल्क़े के इख़्तिताम पर इनफ़िरादी कोशिश की जाए और अच्छी अच्छी निय्यतें करवाई जाएं और नाम व नम्बर्ज़ मदनी पेड पर तह़रीर किये जाएं।

मज़ाराते औलिया पर मदनी ह़ल्क़ों में दी जाने वाली नेकी की दा'वत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप को मज़ार शरीफ़ पर आना मुबारक हो اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी की त़रफ़ से सुन्नतों भरे मदनी ह़ल्क़ों का सिलसिला जारी है, यक़ीनन ज़िन्दगी बेह़द मुख़्तसर है, हम लम्ह़ा ब लम्ह़ा मौत की त़रफ़ बढ़ते चले जा रहे हैं, अ़न क़रीब हमें

www.dawateislami.net

अंधेरी क़ब्र में उतरना और अपनी करनी का फल भुगतना पड़ेगा, इन अनमोल लम्हात को ग़नीमत जानिये और आइये ! अहकामे इलाही पर अ़मल का जज़्बा पाने, मुस्तफ़ा जाने रहमत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतें और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों के मज़ारात पर हाज़िरी के आदाब सीखने सिखाने के लिये मदनी हल्क़ों में शामिल हो जाइये। अल्लाह तआ़ला हम सब को दोनों जहां की भलाइयों से माला माल फ़रमाए। اٰمين بجاهِ النبی الامين صَلَّى الله تعالیٰ عليه واٰله وسلَّم[(1)]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मनक़बत दर हुज़ूरे पुरनूर सय्यिदुना अ़लाउल मिल्लते वद्दीन अ़ली अहमद साबिर

कैसे काटूं रतियां साबिर
तारे गिनत हूं सय्यां साबिर

मोरे करजवा हूक उठत है
मो को लगा ले छतियां साबिर

तोरी सूरतिया प्यारी प्यारी
अच्छी अच्छी बतियां साबिर

चेरी को अपने चरनों लगा ले
मैं परूं तोरे पय्यां साबिर

डोले नय्या मोरी भंवर में
बलमा पकड़े बय्यां साबिर

छतियां लागिन कैसे कहूं मैं
तुम हो ऊंचे अटरियां साबिर

तोरे द्वारे सीस नवाऊं
तेरी ले लूं बलय्यां साबिर

सपने ही में दर्शन दिखला दो
मो को मोरे गसय्यां साबिर

तन मन धन सब तो पे वारे
नूरी मोरे सय्यां साबिर

(सामाने बख़्शिश, स. 77)

1.....मज़ाराते औलिया की हिकायात, स. 32

www.dawateislami.net

ماخذ ومراجع

قرآن پاک	کلامِ الٰہی

نمبر شمار	کتاب	مطبوعہ
1	قرآن کنزالایمان	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
2	سنن الترمذی	دارالفکر بیروت، ۱۴۱۴ھ
3	مجمع الزوائد	دارالفکر بیروت، ۱۴۲۰ھ
4	شعب الایمان	دارالکتب العلمیہ بیروت، ۱۴۲۱ھ
5	کنزالعمال	دارالکتب العلمیۃ بیروت، ۱۴۱۹ھ
6	المعجم الکبیر	داراحیاء التراث العربی بیروت، ۱۴۲۲ھ
7	الجامع الصغیر	دارالکتب العلمیہ بیروت، ۱۴۲۵ھ
8	فیض القدیر	دارالکتب العلمیہ بیروت، ۱۴۲۲ھ
9	مرقاۃ المفاتیح	دارالفکر بیروت، ۱۴۱۴ھ
10	ردالمحتار	دارالمعرفۃ بیروت، ۱۴۲۰ھ
11	اخبار الاخیار	فاروق اکیڈمی، خیر پور پاکستان
12	احیاء علوم الدین	دارصادر، بیروت ۲۰۰۰ء
13	تلبیس ابلیس	دارالکتاب العربی، ۱۴۱۳ھ
14	کتاب المفردات	شیخ غلام علی اینڈ سنز مرکز الاولیاء لاہور
15	حدیقۃ الاولیاء	تصوف فاؤنڈیشن، مرکز الاولیاء لاہور 2000ء
16	صفات الکاملین	الجمال جھنگ بازار فیصل آباد
17	تذکرۂ اولیائے برِ صغیر	ملک اینڈ کمپنی رحمان مارکیٹ مرکز الاولیاء
18	تذکرہ حضرت بہاء الدین زکریا ملتانی	محکمہ اوقاف پنجاب، مرکز الاولیاء لاہور 1980ء
19	نفحات الانس مترجم	شبیر برادرز، مرکز الاولیاء لاہور 2002ء
20	حضرت مخدوم علاؤ الدین علی احمد صابر کلیری	رضا پبلی کیشنز مرکز الاولیاء لاہور ۱۴۲۴ھ
21	خزینۃ الاصفیاء مترجم	مکتبہ نبویہ، مرکز الاولیاء لاہور 2010ء
22	مراٰۃ الاسرار مترجم	الفیصل، مرکز الاولیاء لاہور، 2006ء
23	تاریخ مشائخ قادریہ	بزم قاسمی برکاتی بدایوں شریف 2001ء
24	تذکرۂ حضرت صابر کلیر	نذیر سنز پبلشرز مرکز الاولیاء لاہور

www.dawateislami.net

25	تذکرہ اولیاءِ پاک وہند	شبیر برادرز، مرکز الاولیاء لاہور 2000ء
26	اللہ کے خاص بندے	علم دین پبلشرز، مرکز الاولیاء لاہور
27	سیر الاقطاب مترجم	نفیس اکیڈمی، طباعت دوم، 1987ء
28	اقتباس الانوار	الفیصل، مرکز الاولیاء لاہور
29	فخر التواریخ	مخطوطہ
30	تربیتِ اولاد	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
31	محفلِ اولیاء	زاویہ پبلشرز، مرکز الاولیاء لاہور 2011ء
32	مزاراتِ اولیاء کی حکایات	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
33	فیضانِ سنّت	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
34	سامانِ بخشش	رضوی کتاب گھر دہلی نمبر ۶، ۱۴۰۵ھ

नेक बन्दे की पहचान क्या है ?

सरकारे नामदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, शहनशाहे अबरार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशादे ह़क़ीक़त बुन्याद है, बेशक लोगों में से वोह लोग बुरे हैं जिन से लोग मह़ज़ उन के शर की वज्ह से बचते हों।

(مُوطا امام مالک، ج۲، ص۴۰۳، حدیث ۱۷۱۹)

मज़ीद सुल्त़ाने दो जहान, शहनशाहे कौनो मकान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है, **अल्लाह** तआ़ला के नेक बन्दे वोह हैं जिन्हें देखें तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ याद आ जाए और **अल्लाह** तआ़ला के बुरे बन्दे वोह हैं जो चुग़ल ख़ोरी करते, दोस्तों में जुदाई डालते और नेक लोगों के ऐ़ब तलाश करते हैं।

(مسند امام احمد، ج ۶، ص ۲۹۱، حدیث ۱۸۰۲۰)

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस्त

उ़नवान	सफ़्हा	उ़नवान	सफ़्हा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	मेरे दिल का इ़ल्म अ़लाउद्दीन के पास है	17
कमाले सब्र ने **साबिर** बना दिया	1	ख़िलाफ़त की अ़ज़ीमुश्शान महफ़िल	18
विलादते बा सआ़दत	3	कलयर की ख़िलाफ़त	19
शजरए नसब	3	कलयर आमद	20
कान में अज़ान	4	आज येह सुन्नत भी अदा हो गई !	21
नाम व लक़ब में भी इम्तियाज़ी शान	5	अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के वली की दिल आज़ारी का अन्जाम	23
वालिदैन	6		
ज़बान से अदा होने वाला पहला जुम्ला	6	अ़ब्द व मा'बूद के माबैन फ़र्क़	25
ज़बान खुलने के बा'द अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का नाम सिखाइये	7	नमाज़ से महब्बत	25
		लिबास	26
बच्चे को ज़िक्रुल्लाह ऐसे सिखाइये	7	बा इमामा रहना अ़क़्लमन्दी की अ़लामत है	26
तहज्जुद की पाबन्दी फ़रमाते	8	बुर्दबार बनने का आसान अ़मल	27
बचपन की एक प्यारी आ़दत	8	आप की ग़िज़ा	27
छोटी सी उ़म्र में ही रोज़ा रखने का मा'मूल	9	एक ग़ैर मुस्लिम का क़बूले इस्लाम	29
रोज़े से सिह्हत मिलती है	9	मेहमानों की ख़ैर ख़्वाही फ़रमाते	30
बचपन ही में सजदों से महब्बत	10	ज़िन्दगी के हर पहलू से सब्र झलकता	31
सांप के ज़रर से नजात की ख़ुश ख़बरी	11	सब्र के फ़ज़ाइल पेशे नज़र रखिये	31
तीन साल में उ़लूमे ज़ाहिरी की तक्मील	12	बारगाहे इलाही में दुआ़ कीजिये	32
दादा की वफ़ात की पेशगी ख़बर दे दी	15	आ़जिज़ी अपना लीजिये	32
औलिया भी ग़ैब जानते हैं	15	सब्र में मुसाबक़त का ज़ेह्न बना लीजिये	33

www.dawateislami.net

इन्तिक़ामी कारवाई की आ़दत तर्क कीजिये	33	नज़्रे **साबिर** का इन्तिख़ाब	39
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों को याद कीजिये	33	मेरा शम्स ही काफ़ी है !	40
शबो रोज़ के मा'मूलात	34	विसाले मुबारक	41
बारगाहे **साबिर** में भेज दिया	35	मज़ार की बे हुर्मती की हाथों हाथ सज़ा	42
तिलावते क़ुरआन ने कैसा मर्तबा दिया !	36	औलिया बा'दे वफ़ात भी नफ़्अ़ पहुंचाते हैं	45
अमीर ख़ुसरू की मेहमान नवाज़ी	37	मजलिसे मज़ाराते औलिया	46
हज़रते महबूबे इलाही और हज़रते **साबिरे** पाक	38	मनक़बत	49
शम्सुद्दीन मेरा दोस्त है !	38	माख़ज़ो मराजेअ़	50

सब क़ब्र वालों को सिफ़ारिशी बनाने वाला अ़मल

सुल्ताने दो जहान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने शफ़ाअ़त निशान है : जो शख़्स क़ब्रिस्तान में दाख़िल हुवा फिर उस ने सूरतुल फ़ातिहा, सूरतुल इख़्लास और सूरतुत्तकासुर पढ़ी फिर येह दुआ़ मांगी : "या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने जो कुछ क़ुरआन पढ़ा इस का सवाब इस क़ब्रिस्तान के मोमिन मर्दों और मोमिन औ़रतों को पहुंचा तो वोह सब के सब क़ियामत के रोज़ इस (या'नी ईसाले सवाब करने वाले) के सिफ़ारिशी होंगे । (شرحُ الصُّدُور، ص ۳۱۱)

हर भले की भलाई का सदक़ा इस बुरे को भी कर भला या रब !

www.dawateislami.net

FAIZANE BABA FARID GANJE SHAKAR (HINDI)

फ़ैज़ाने बाबा फ़रीद गंजे शकर (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)

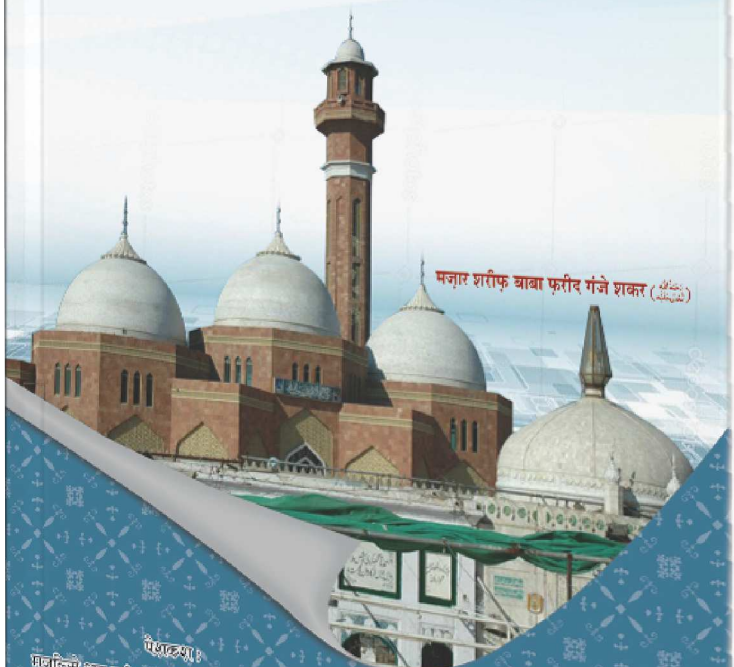

पेशकश :
मजलिसी अल मदीनतुल इल्मिया (दा'वते इस्लामी)
शो'बा फ़ैज़ाने औलिया व इल्म

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमा'रात बा'द नमाज़े इशा आप के यहां होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ❁ सुन्नतों की तरबियत के लिये मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा मदनी मक्सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَ اللّٰه अपनी इस्लाह़ के लिये "मदनी इन्आ़मात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه

ISBN
0133036

MC 1288

मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

❁ देहली :- उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ़ मस्जिद, देहली -6, फ़ोन : 011-23284560

❁ अहमदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बगीचे के सामने, मिरज़ापुर, अहमदाबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200

❁ मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा इस्टेट, खाड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997

❁ हैदराबाद :- मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786

E- mail : maktabadelhi@gmail.com, Web : www.dawateislami.net